A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 15 नवम्बर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 75, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

यह मोदी मैजिक, निश्चय नीतीश और मैनेजमेंट की जीत है...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की सुनामी के मूल में मुख्य रूप से तीन कारण हैं मोदी मैजिक, निश्चय नीतीश और कुशल चुनाव मैनेजमेंट। इस चुनाव में प्रतिद्वंद्वी महागठबंधन की दयनीय पराजय इस बात का अलार्म है कि विपक्ष को अपनी रणनीति, चुनाव प्रबंधन और जनता की नब्ज पकड़ने वाले राजनीतिक ऑक्सीमीटर पर नए सिरे से विचार करना होगा। बिहार के नतीजों ने यह भी साफ कर दिया है कि सोशल मीडिया और चंद बुद्धिजीवियों द्वारा बनाई नकली हवा को 'मायासभा' मानकर की जाने वाली राजनीति का परिणाम यही होता है। विपक्षी नेता यह मान बैठे थे कि 'वोट चोरी', करोड़ों नौकरियां देने, पलायन रोकने, वक्फ कानून फाड़ देने जैसी असंवैधानिक बातें करके और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा चुनाव आयोग को गाली देकर चुनाव जीत लेंगे। लेकिन अपने वोट डलवाने के लिए सुव्यवस्थित चुनाव प्रबंधन और जनता का भरोसा चाहिए। एनडीए जिस बम्पर जीत की पताका फहरा रहा है, वह बिहार में 2010 के विधानसभा चुनाव नतीजों को दोहराने जैसा है। लेकिन ताजा जीत उससे कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण इसलिए है, क्योंकि इस बार 20 साल की एंटी एनकम्बेंसी को मात देकर यह जीत हासिल हुई है।

बिहार में एनडीए की यह विजय आरंभिक आंतरिक विवादों, मनमुटावों आशंकाओं के बावजूद मतदान की तारीख आते-आते एक समन्वित, सामंजस्यपूर्ण और निश्चित लक्ष्य के साथ किए गए चुनाव प्रचार की भी जीत है। चुनाव की घोषणा से पहले जीत की जमीन लक्षित मतदाता समूहों को ध्यान में रखकर की गई लोक लुभावन योजनाओं की घोषणाओं और उन पर अमल (जिसे आम बोलचाल में रेवड़ी कहा जाता है) से तैयार की गई। मतदाताओं में यह विश्वास पैदा किया गया कि आर्थिक सशक्तिकरण के नाम पर सौगातों की यह बारिश सत्ता में वापसी के बाद भी जारी रहेगी। फिर चाहे वह डेढ़ करोड़ महिलाओं के खाते में 10 हजार रू. नकद हों, गरीबों को घर हों, गांव में बिजली हो, बेरोजगार ग्रेजुएटों को दो साल तक 1 हजार रू. प्रतिमाह भत्ता हो या फिर दिव्यांगों, बुजुर्गों, निराश्रितों की पेंशन बढ़ाकर लगभग तिगुनी करना हो, लोगों के आर्थिक सशक्तिकरण की ये बारूदी सुरंगें थीं, जो चुनाव के पहले बड़ी चतुराई से बिछा दी गई थीं। उन्हीं का विस्फोट प्रचंड जनादेश के रूप में 14 नवंबर को हुआ। इसके अलावा लालू प्रसाद यादव के समय के 'जंगलराज' को बार-बार याद दिलाया गया। बिहार की जनता अराजकता के उस दौर में नहीं लौटना चाहती थी। इन तमाम उपायों ने नीतीश सरकार के प्रति एंटी इनकम्बेंसी को प्रो-इनकम्बेंसी में बदल दिया। ऐसा नहीं है कि इसकी काट के रूप में महागठबंधन ने कुछ नहीं किया। महागठबंधन के सबसे बड़े घटक राजद के नेता और मुख्यमंत्री पद के दावेदार तेजस्वी यादव ने इतनी बड़ी-बड़ी और हवाई घोषणाएं कर डालीं कि खुद घोषणाओं का खुद पर से भरोसा उठने लगा। अमूमन ऐसी घोषणाएं राजनीतिक दल तभी करते हैं, जब भीतर उन्हें यकीन हो कि वो सत्ता में नहीं आने वाले, यानी रात गई, बात गई। चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दो बड़े फैक्टर थे। दोनों ने अपने वोट बैंक को न केवल सहेजे रखा, बल्कि उसमें भारी इजाफा भी किया। मोदी की अपील तो हर वर्ग में है, जबकि नीतीश ने साबित किया कि अति पिछड़ों और महिलाओं में उनकी पैठ को कोई चुनौती नहीं दे सकता।

बेशक विपक्ष बिहार में एकदम बैक फुट पर नहीं खेल रहा था। लेकिन सत्ता में आने का अतिआत्मविश्वास, लेकिन घटक दलों में परस्पर अविश्वास, शुरू से लेकर अंत तक समन्वय का अभाव उसकी लुटिया डुबो गया। मसलन तेजस्वी तब तक चुनाव प्रचार में नहीं उतरे, जब तक कि उन्हें सीएम पद का दावेदार घोषित नहीं करवा लिया गया। कांग्रेस के सबसे बड़े नेता राहुल गांधी चुनाव ऐलान के एक माह पूर्व 'वोट चोरी' मुद्दा उठाकर सियासी तवा गरम कर गए, लेकिन बाद में सही वक्त पर रोटी पलटने के लिए नहीं आए। हालांकि प्रचार के दौरान उन्होंने मछली पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वो भी हाथ से फिसल गई। उधर उपमुख्यमंत्री बनने को बेताब और पिछले साल तेजस्वी यादव के साथ नवरात्रि में मछली खाने का वीडियो जारी करने वाले मुकेश सहनी को डिप्टी सीएम बनाने के ऐलान ने भी पूरे महागठबंधन की लुटिया डुबोई। इसका पूरा फायदा असदुद्दीन ओवैसी ने उठाया। उन्होंने सवाल किया कि दो परसेंट वाला वोट वाला अगर डिप्टी सीएम घोषित हो सकता है तो 18 प्रतिशत मुस्लिम वोट में क्या राजद को एक भी व्यक्ति उपमुख्यमंत्री पद के काबिल नजर नहीं आया?

इस बार चुनाव में 10 फीसदी ज्यादा वोट पड़ने के बाद कयास लगाए जा रहे थे कि यह किस के पक्ष में जाएगा? ज्यादा वोटिंग को अपने पक्ष में मानकर महागठबंधन ने शपथ ग्रहण की तैयारी भी कर ली थी। लेकिन जैसे ही नतीजे विपरीत आने शुरू हुए, चुनाव आयोग को कोसा जाने लगा। वैसे यह पहले से तय था कि अगर विपक्षी गठबंधन जीता तो इसे मोदी और नीतीश की हार तथा चुनाव आयोग द्वारा विपक्ष को हराने की कथित कोशिशों को नाकाम करना बताया जाएगा। और हारे तो ईवीएम, चुनाव आयोग और एसआईआर पर ठीकरा फोड़ा जाएगा। उसकी शुरूआत हो चुकी है।

बिहार चुनाव नतीजों ने पारंपरिक मान्यताओं को भी तोड़ा है। ये शायद पहली बार है, जब बिहार में जातीय गोलबंदी पर साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण हावी हुआ है। योगी आदित्यनाथ ने जिन 43 सीटों पर चुनाव प्रचार किया, भाजपा उनमें से 32 सीटें जीत रही है। राजद, कांग्रेस और वामदल मुसलमानों के वोट बैंक को अपनी एफडी मानते आए हैं, उसमें ओवैसी ने सेंध लगा दी है और मुसलमानों में यह सोच गहराया है कि उनका अपना भी कोई नेता होना चाहिए। इसी तरह राजद का यादव वोट भी दरका है। मप्र के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को यह महती जिम्मेदारी दी गई थी। उन्होंने जिन यादव बहुल 26 सीटों पर प्रचार किया, उनमें से ज्यादातर भाजपा के खाते में गई हैं। राजद के एमवाय समीकरण की जगह महिला यूथ का एक नया समीकरण उभरा है, जिसने एनडीए की जीत में अहम भूमिका नहीं निभाई। जिन प्रशांत किशोर को बड़ा खिलाड़ी माना जा रहा था, लगता है उन्हें अब फिर से अपने धंधे में लौटना पड़ेगा। यानी चुनावी रणनीतिकार खुद भी चुनाव जीते जरूरी नहीं है।

यह लगभग तय है कि नीतीश कुमार फिर पांचवी बार सीएम होंगे। इसका कारण उनकी लोकप्रियता तो है ही, केन्द्र की एनडीए सरकार की मजबूती के लिए भी उनके समर्थन की जरूरत है। इन नतीजों का असर दूसरे राज्यों पर भी दिखाई देगा। विपक्षी नेता सार्वजनिक रूप से कुछ भी कहें लेकिन पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में 'एसआईआर' का मुद्दा उन्हें चुनाव नहीं जितवा पाएगा। अलबत्ता सभी सत्तारूढ़ पार्टियां रेवड़ी कल्चर को तेजी से अपनाएंगीं ताकि मतदाता का भरोसा जीता जा सके। इस चुनाव के बाद एनडीए आत्मविश्वास और बढ़ेगा तथा राज्य सभा में भी उसकी ताकत बढ़ेगी।

एनडीए की 'छप्परफाड़' जीत

● हर ओर एक ही ललकार, बिहार में फिर से नीतिशे कुमार ● रिकॉर्ड जीत के साथ बिहार में जेडीयू-बीजेपी की बम-बम

महागठबंधन के स

पटना (एजेंसी)। बिहार चुनाव के नतीजे लगभग साफ हो गए हैं। 243 सीटों के परिणाम में एनडीए ने लगभग क्लीन स्वीप कर लिया है। बिहार के मतदाताओं ने अबकी बार एनडीए को ऐतिहासिक जीत दी है। एनडीए को 2020 के मुकाबले 65 से ज्यादा सीटों का फायदा हो रहा है, वहीं महागठबंधन को लगभग इतनी ही सीटों का नुकसान हो रहा है। पिछली बार 43 सीटों पर सिमटी जेडीयू इस बार 75+ पहुंच गई है। यानी नीतिश कुमार 10वीं बार सीएम पद की शपथ ले सकते हैं। वहीं 92 सीटों पर बढ़त के साथ बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। महागठबंधन में राजद 24 सीटों पर जीत की ओर है जबकि 61 सीटों पर लड़ रही कांग्रेस सिर्फ 1 सीट पर सिमट गई है। 243 सीटों पर लड़ रही प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज का खाता तक नहीं खुला है।

बिहार के लोगों ने गर्दा उड़ा दिया

बोले पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने दिल्ली में शुक्रवार शाम को बिहार में एनडीए की जीत पर कहा कि बिहार के लोगों ने गर्दा उड़ा दिया। अब कट्टा सरकार कभी वापस नहीं आएगी। उन्होंने छठी मईया के जयकारे भी लगाए। वे शाम 6 बजकर 51 मिनट पर पीएम भाजपा मुख्यालय पहुंचे। उन्होंने कार्यकर्ताओं का गमछा लहराकर अभिवादन किया। इस दौरान सारे कार्यकर्ताओं ने भी गमछा लहराया। इस मौके पर सबसे पहले भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि जनता ने जंगलराज के खिलाफ को विकास चुना। पीएम मोदी ने कहा कि बिहार के चुनाव में जब मैं जंगलराज और कट्टा सरकार की बात करता था, तब आरजेडी के लोग तो कुछ नहीं कहते थे, लेकिन कांग्रेस के लोगों को यह बहुत चुभता था। मैं बार-बार कहता था। अब कट्टा सरकार वापस नहीं आएगी। पीएम मोदी ने मंच से सबसे पहले छठी मईया का जयकारे लगाए। उन्होंने कहा कि ये प्रचंड जीत, अटूट विश्वास, बिहार के लोगों ने बिल्कुल गर्दा उड़ा दिया। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में समाज के सभी वर्गों का आशीर्वाद मिला। महागठबंधन समाज को बांटने की राजनीति कर ही थी। तुष्टिकरण की राजनीति कर रही थी।

बिहार में 90 सीटों के साथ पहली बार बीजेपी नंबर-1

बिहार में प्रचंड साथ एनडीए स बना रही है। 90 पर बीजेपी, 84 सीटों पर जेडीयू और 29 सीटों पर उसकी सहयोगी पार्टियां आगे चल रही हैं। पहली बार बिहार में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनी है। पिछले 25 साल में ये तीसरा मौका है जब एनडीए में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनी है। इससे पहले 2000 और 2020 में भी बीजेपी नंबर वन थी।

एनडीए की डबल सेंचुरी, यह तो सुनामी है, विपक्ष के नामी दिग्गज नाम के ही रह गए...

बिहार में एनडीए को जो सफलता मिली है, उसका अनुमान गठबंधन के बड़े-बड़े नेताओं ने भी नहीं किया था। यहां तक कि बिहार में एनडीए की बड़ी जीत का अनुमान लगाने वाले लगभग सभी एग्जिट पोल तक यह भांप नहीं पाए थे कि वहां सत्ताधारी बीजेपी-जेडीयू गठबंधन के पक्ष में लहर चल रही है। सिर्फ एक एक्जिट पोल को छोड़कर किसी ने एनडीए की इतनी बड़ी जीत की भविष्यवाणी नहीं की थी। बाकी ने जो सबसे ज्यादा सीटें भी दी थीं, वह भी अधिकतम 167 पर जाकर अटक गए थे। जबकि, केंद्रीय गृहमंत्री और बीजेपी के दिग्गज रणनीतिकार अमित शाह ने 243 सीटों में 160 से अधिक सीटें आने की संभावना जताई थी लेकिन जब परिणाम आया तो एनडीए की सुनामी रही और आंकड़ा 200 पार पहुंच गया।

शाह बोले-

बिहारवासियों का एक-एक वोट भारत की सुरक्षा और संसाधनों से खेलने वाले घुसपैठियों और उनके हितैषियों के खिलाफ मोदी सरकार की नीति में विश्वास का प्रतीक है। वोटबैंक के लिए घुसपैठियों को बचाने वालों को जनता ने करारा जवाब दिया है। बिहार की जनता ने पूरे देश का मूड बता दिया है कि मतदाता सूची शुद्धिकरण अनिवार्य है और इसके खिलाफ राजनीति की कोई जगह नहीं है।

एग्जिट पोल भी नहीं लगा पाए अनुमान

बिहार विधानसभा चुनाव के अंतिम चरण यानी 11 नवंबर, 2025 को या उसके बाद जो अधिकतर एग्जिट पोल आए, उनमें से लगभग सभी ने एनडीए की बड़ी

जीत की भविष्यवाणी की थी। लेकिन, किसी ने यह अनुमान नहीं लगाया था, जो परिणाम देखने को मिला है। सिर्फ एक एग्जिट पोल, पोल डायरी ने एनडीए को 184 से 209 सीटें मिलने की भविष्यवाणी की थी। बाकी सब फेल रहे।

शरद की सुबह

कल जहाँ धमाका हुआ था
आज वहाँ खून के दाग मिट चुके हैं
सारा कबाड़ भी हटाया जा चुका है।
आज की सुबह भी वैसी ही है
जैसी हर सुबह होती है
उजली और उमंग भरी
बच्चे स्कूल जा रहे हैं
बस्ता सँभाले
पर कुछ घरों में स्कूल यूनीफार्म
बिना पहने रखे हुए हैं
लोग काम पर जा रहे हैं
हाथों में टिफिन लिए हुए
पर कुछ घरों में टिफिन
बिना भरे रखे हुए हैं
सड़कों पर भीड़ है तेज़ कदमों से
चलती हुई
पर कुछ घरों में जूते चप्पल
बिना पैरों के हो गए हैं।
कल ही उसने मनाया था अपने पापा को
जन्मदिन के लिए नई फ्रॉक खरीदने
के लिए
वह उमंग से दुकान में घुस ही रही थी
कि धमाका हुआ
वह जिस फ्रॉक को पसंद करती
वह अब भी वहीं रखी है।
बहुत दूर से महानगर पढ़ने आया
वह छात्र क़िताब खरीद कर ख़ुशी-ख़ुशी
लौट रहा था कि धमाका हुआ
अब कोई उसके घर फोन लगाएगा
और सबसे भयानक सूचना देगा।
आज शहर सामान्य है
धमाके के बाद देश नहीं मिटा
कुछ नहीं बदला
फिर तुम्हें क्या मिला आतंकवादी ?
हाँ, कुछ हँसते-खेलते घरों को
तुमने जीवन भर की उदासी
ज़रूर दे दी है
क्या यही तुम्हारा उद्देश्य था?
- चंद्रशेखर साकल्ले

जनजातीय गौरव दिवस वह शंखनाद है, जिसने जननायकों के बलिदान और शौर्य का परिचय नई पीढ़ी से कराया : मुख्यमंत्री

हमारी धरती-हमारा राज : पानसेमल और वरला में उद्वहन सिंचाई परियोजना मंजूर

भोपाल (नप्र)। हमारी धरती-हमारा राज। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश जनजातियों का अपना घर है, जिस ट्राइबल स्टेट भी कहा जाता है। यह उपमा ही हमारे अस्तित्व का सबसे बड़ा अभिनंदन है। जनजातियां, हमारी मुकुट मणियां हैं, यह प्रत्येक मध्यप्रदेशवासी के लिए अत्यंत गौरव और सम्मान की बात है। अबुआ दिशुम-अबुआ राज यानी हमारी धरती, हमारा राज। हमारी धरती और संस्कृति ही हमारी पहचान है और इसी पहचान का उत्सव हम सब आज बड़वानी में मना रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातीय गौरव दिवस वह शंखनाद है, जिसने नई पीढ़ी को वीर जननायकों के बलिदान, शौर्य और साहस से परिचित कराया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को बड़वानी जिले की पानसेमल विधानसभा क्षेत्र के ग्राम मोरतलाई में जनजातीय गौरव दिवस के मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्राम मोरतलाई में धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की भव्य आदमकद प्रतिमा का लोकार्पण किया। साथ ही बड़वानी जिले के लिए 133 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले 6 विकास कार्यों का लोकार्पण एवं 5 विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। इसमें 46 करोड़ से अधिक की लागत से तैयार राजपुर से दवाना मार्ग का लोकार्पण और 14 करोड़ 86 लाख रूपए की लागत से सेंधवा में नवीन शासकीय महाविद्यालय भवन, बलवाड़ी का भूमिपूजन शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्थानीय जनप्रतिनिधियों की मांग पर पानसेमल और बारला में उद्वहन सिंचाई परियोजना के विस्तार की घोषणा करते हुए कहा कि अब क्षेत्र के सभी 51 गांवों के किसानों को सिंचाई के लिए जल दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पानसेमल में रेस्टहाउस बनाने और यहीं पर अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) का कार्यालय (एसडीओपी आफिस) खोलने, टेमला में हायर सेकेंडरी स्कूल खोलने, मोरतलाई के मिडिल स्कूल को हायर सेकेंडरी स्कूल में प्रोन्नत करने एवं रायचूर में उपलब्ध हाई स्कूल को हायर सेकेंडरी स्कूल में प्रोन्नत करने की घोषणा की।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 27 °c

न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 15 नवंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

यूपी में अब एक कॉल पर बनेगी बुजुर्गों की पेंशन

20 प्रस्तावों पर कैबिनेट की मुहर

लखनऊ (एजेंसी)। योगी सरकार ने 65 साल बुजुर्गों को तोहफा दिया है। अब उन्हें वृद्धावस्था पेंशन के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। इसे लेकर योगी सरकार ने सिस्टम में बदलाव किया है। कैबिनेट ने बैठक में पेंशन भुगतान योजना पर मुहर लगा दी है। पहले जो बुजुर्ग पेंशन बनवाने तहसील से लेकर जिलाधिकारी दफ्तर तक भटकते थे। अब सरकार उन्हें खुद फोन करेगी और पूछेगी–आपकी आयु 60 साल की हो गई है, क्या आप वृद्धावस्था पेंशन लेना चाहते हैं। सहमति देने पर एक आसान प्रक्रिया के बाद पेंशन बन जाएगी। इसके अलावा, 19 और प्रस्ताव भी पास हुए हैं। मंत्रिमंडल बैठक में भारतीय महिला क्रिकेट टीम को वर्ल्ड कप जीत पर बधाई दी गई। समाज कल्याण मंत्री असीम अरुण ने बताया कि वृद्धावस्था पेंशन देने में कई कठिनाई आ रही थी। इसलिए सरकार ने फैमिली आईडी सॉफ्टवेयर तैयार किया है। इसके जरिए सरकार को वृद्धावस्था पेंशन के लिए पात्र लोगों की जानकारी मिलेगी। साथ ही आगामी तीन महीने में कौन लोग 60 वर्ष की आयु पूरी करेंगे,जानकारी मिलेगी।

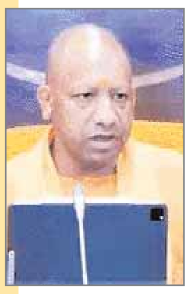

बिहार जीत की बधाई के लिए अखिलेश को भेजेंगे 11 किलो लड्डू

केशव प्रसाद मौर्य का बड़ा ऐलान

लखनऊ (एजेंसी)। बिहार चुनाव 2025 के रुझानों ने अब नतीजों की तस्वीर साफ कर दी है। एनडीए बिहार में सरकार बनाने जा रही है। इस चुनाव में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर सामने आ रही है। बिहार चुनाव में बीजेपी सह प्रभारी की भूमिका निभाने वाले यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि हम 2010 के नतीजों को दोहराने जा रहे हैं। इस जीत का श्रेय पीएम मोदी, नीतिश कुमार और बिहार की जनता को जाता है, क्योंकि एनडीए का चुनाव जनता ने लड़ा था। केशव प्रसाद मौर्य ने सपा मुखिया अखिलेश यादव को 11 किलो लड्डू भेजने की बात कही है। केशव ने पटना एयरपोर्ट पर अखिलेश यादव से हुई मुलाकात का भी जिक्र किया है। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि बिहार चुनाव में मेरी भूमिका बड़ी रही, ये कहना गलत है।

कांग्रेस-आरजेडी के हारते ही अखिलेश की धमकी

कहा-जो खेल बिहार में हुआ, यूपी में नहीं हो पाएगा

लखनऊ (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के नतीजों में महागठबंधन की करारी हार और एनडीए को मिली प्रचंड जीत का असर पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश में भी दिखने लगा है। समाजवादी पार्टी के मुखिया और यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने चुनौती देते हुए कहा है कि जो खेल बिहार में खेला गया है, वो उत्तर प्रदेश में नहीं हो पाएगा। अखिलेश यादव ने अपने एक्स (ट्विटर) हैंडल पर पोस्ट करते हुए लिखा है कि भारतीय जनता पार्टी चुनाव जीतने के लिए छल करती है। शुक्रवार को आए नतीजों के बाद अखिलेश यादव ने अपनी पोस्ट में लिखा, बिहार में जो खेल एसआईआर ने किया है, वो पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, यूपी और बाकी जगह पर अब नहीं हो पाएगा, क्योंकि इस चुनावी साजिश का अब भंडाफोड़ हो चुका है। अब आगे हम ये खेल, इनको नहीं खेलने देंगे।

ड्राइवर को झपकी आई, कार उड़कर खाई में गिरी

शादी से लौट रहे परिवार के 5 लोगों की मौत, अंधाधुंध स्पीड का वीडियो सामने आया

रतलाम (नप्र)। रतलाम में एक कार बेकाबू होकर खाई में गिर गई। हादसे में पांच लोगों की मौत हुई है। इनमें 15 साल का बच्चा और 60 साल के बुजुर्ग शामिल हैं। हादसा सीसीटीवी कैमरे में कैद हुआ है।

एक्सीडेंट रतलाम जिले के रावटी थाना अंतर्गत भीमपुरा गांव के पास माही नदी ब्रिज के पहले हुआ। सुबह करीब साढ़े 7 बजे महिंद्रा एसयूवी 700 दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे पर रेलिंग तोड़कर नीचे जा गिरी।

पुलिस के मुताबिक, हादसा ड्राइवर को झपकी आने के कारण हुआ। कार सवार चार लोग मुंबई जबकि एक गुजरात के वडोदरा का रहने वाला है। वे दिल्ली से मुंबई जा रहे थे। सभी शवों को रतलाम मेडिकल कॉलेज में रखा गया है।

नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के डायरेक्टर संदीप पाटीदार ने कहा- जिस जगह दुर्घटना हुई, उससे 10 फीट दूर स्पीड गन लगी है। इससे पता लगा है कि गाड़ी की स्पीड करीब 150 किलो मीटर प्रति घंटा थी।

परिजनों ने की मृतकों की पहचान- गुजरात के वडोदरा से मृतकों के परिजन शाम 4.30 बजे रतलाम मेडिकल कॉलेज पहुंचे। इंदौर से भी कुछ लोग पहुंचे। सभी मृतकों की शिनाख्त की। हादसे में रसूल अहमद (71) पिता मोहम्मद इशाक चौधरी निवासी कुर्ला मुंबई, इनका बेटा अब्दुल खालिक (40) पिता गुलाम रसूल, दुर्रेज (39) पिता अजमल कुर्ला मुंबई एवं दानिश (34) पिता मोहम्मद उस्मान निवासी वडोदरा व इनका बेटा मोइद्दीन (9) की मौत हुई है। दुर्रेज गाड़ी चला रहा था।

यूपी के गोंडा शादी में गए थे- सभी मृतक एक ही परिवार के हैं। मूल रूप से यूपी के गोंडा के रहने वाले हैं। मृतक रसूल अहमद की बहन की बेटी और बेटे की शादी 8 अक्टूबर को थी। उसी में परिवार गया था। गोंडा से गुरुवार दोपहर परिवार के सदस्य अलग-अलग गाड़ियों में निकले थे। एक गाड़ी के परिवार के सदस्य कानपुर रुक गए थे। बाकी यह लोग वहां से दिल्ली होकर रवाना हो गए थे।

दूसरी गाड़ी में बैठा बच्चा- मृतक बच्चा मोइद्दीन दूसरी गाड़ी में अपने बड़े पापा के साथ था। कानपुर से पिता के साथ गाड़ी में बैठ गया। रसूल आयुर्वेदिक डॉक्टर थे, जो कि रिटायर्ड हो चुके। अब्दुल और दुर्रेज का आईटी का कामकाज है। दानिश गुजरात में एक कंपनी में एचआर है।

सीएम के बेटे-बहू सामूहिक विवाह सम्मेलन में लेंगे 7 फेरे

उज्जैन में 5 दिन तक चलेंगी शादी की रस्में ; खास लोगों को ही निमंत्रण

उज्जैन/भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के छोटे बेटे डॉ. अभिमन्यु यादव की शादी खरगोन की डॉ. इशिता से सामूहिक विवाह समारोह में होगी। करीब 5 दिन तक चलने वाले कार्यक्रम के लिए उज्जैन में दो होटल बुक किए गए हैं। कुछ रस्में उज्जैन स्थित सीएम हाउस यानी वीआईपी आवास जबकि कुछ अथर्व होटल में होंगी।

अभिमन्यु-इशिता के फेरे 30 नवंबर को अथर्व होटल के पास मैदान में हो रहे सामूहिक सम्मेलन में होंगे। रिसेप्शन अथर्व होटल में होगा।

शादी समारोह में प्रदेश के कुछ खास लोगों को ही आमंत्रित किया गया है। इसमें दोनों परिवारों के करीबी रिश्तेदार, राज्य के मंत्री, वरिष्ठ अफसर और भाजपा के प्रमुख पदाधिकारी शामिल हो सकते हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव के 26 नवंबर को ही उज्जैन पहुंचने की संभावना है।

यह पहला मौका होगा, जब किसी मुख्यमंत्री के बेटे के फेरे की रस्में सामूहिक विवाह समारोह में पूरी होंगी। इसमें डॉ. अभिमन्यु और डॉ. इशिता के अलावा 20 अन्य जोड़ों की शादी होगी।

दोनों परिवारों की बेटियां एक-दूसरे के घर की बहू- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के छोटे बेटे डॉ. अभिमन्यु यादव की सगाई करीब 5 महीने पहले खरगोन के किसान दिनेश पटेल की बेटी डॉ. इशिता से हुई है। अभिमन्यु भोपाल के एलएनसीटी मेडिकल कॉलेज से मास्टर्स इन सर्जरी कर रहे हैं। वे सेकेंड ईयर में हैं। डॉ. इशिता भी एमबीबीएस के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन कर रही हैं।

सीएम की बेटी डॉ. आकांक्षा यादव, दिनेश यादव की बहू हैं। अब दिनेश यादव की बेटी इशिता डॉ. मोहन यादव के परिवार की बहू बनने जा रही हैं। एक और खास बात ये है कि कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अरुण यादव, दिनेश यादव के मामा के बेटे हैं। यानी एमपी के पूर्व डिप्टी सीएम स्वर्गीय सुभाष यादव दिनेश यादव के मामा थे।

सीएम ने शेयर की थी सगाई की फोटो- सीएम डॉ. मोहन यादव और सीमा यादव के दो बेटे और एक बेटी हैं। बड़े बेटे और बेटी की शादी पहले ही हो चुकी है।सीएम ने बेटे की सगाई की फोटो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर करते हुए लिखा था- बाबा श्री महाकाल और श्री गोपाल कृष्ण की परम कृपा, पूज्य पिता और माताश्री के आशीर्वाद से पुत्र चिरंजीवी डॉ. अभिमन्यु यादव की सगाई, खरगोन के दिनेश यादव जी की सुपुत्री डॉ. इशिता यादव के साथ संपन्न हुई।

विश्व मधुमेह दिवस

तनाव, दबाव और अवसाद से खुद को रखें मुक्त: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज विश्व मधुमेह दिवस है, जो हमें जागरूक करता है कि योग, ध्यान और संयमित व्यवहार से हम स्वस्थ रह सकते हैं। साथ ही जीवन में सर्वोच्च लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से आह्वान किया कि आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि अपनी जीवन शैली को उत्तम स्वास्थ्य के अनुकूल बनाए रखेंगे। साथ ही तनाव, अवसाद और अत्यधिक दबाव से खुद को हमेशा मुक्त रखेंगे।

जनजाति गौरव दिवस : मुख्यमंत्री जबलपुर में करेंगे भव्य राज्य स्तरीय समारोह का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जबलपुर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस का भव्य राज्य स्तरीय समारोह का शुभारंभ करेंगे। यहाँ जिलों से निकलने वाली जनजातीय गौरव रथ यात्राओं का समागम होगा। बड़ी संख्या में जनजातीय समुदायों के सदस्य पारंपरिक वेशभूषा और अपने पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ एकत्र होंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कार्यक्रम को गुजरात के नर्मदा जिले से संबोधित करेंगे और विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे। सभी राज्य इस कार्यक्रम से जुड़ेंगे। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह सहित जनप्रतिनिधि एवं जनजातीय समुदाय के प्रतिनिधि विशेष रूप में उपस्थित रहेंगे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव जनजातीय गौरव को दर्शाने वाली प्रदर्शनी का शुभारंभ करेंगे। प्रदर्शनी भगवान बिरसा मुंडा के जीवन और योगदान पर आधारित है। जनजातीय महानायकों में रानी दुर्गावती, शंकर शाह, रघुनाथ शाह, टंट्या भील के जीवन और योगदान को भी दर्शाया जायेगा। मुख्यमंत्री इस अवसर पर जनजातीय धर्म गुरुओं का सम्मान करेंगे और उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल करने वाले जनजातीय समाज के सदस्यों को सम्मानित किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी सुश्री क्रांति गौड़, राज्य सरकार के सहयोग से लंदन में पढ़ाई कर रहे श्री आसाराम पलवी और श्री रवि मेडा और लिसेस्टर विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे का भी सम्मान होगा।

बाहुबलियों की सीट: अनंत-अमरेंद्र पांडे रिकॉर्ड वोट से जीते

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजे आज आ गए हैं। सुबह 8 बजे से वोटों की गिनती शुरू हो गई थी। मोकामा से जदयू प्रत्याशी अनंत सिंह और कुचायकोट से जदयू प्रत्याशी अमरेंद्र पांडे रिकॉर्ड वोट से जीत गए है। दानापुर से लगातार आगे चल रहे बाहुबली रीतलाल पिछड़ गए हैं जबकि बीजेपी के कैंडीडेट रामकृपाल यादव ने निर्णायक बढ़त बना ली है। वहीं तरारी से बीजेपी कैंडीडेट विशाल प्रशांत और रघुनाथपुर से ओसामा चुनाव जीत गए हैं। लालगंज से राजद प्रत्याशी शिवानी शुक्ला पीछे रहीं। वहीं,

ब्रह्मपुर से लोजपा (आर) प्रत्याशी हुलास पांडे भी जीत गए हैं। सबसे दिलचस्प मुकाबला मोकामा में रहा। यहां अनंत सिंह का मुकाबला सूरजभान सिंह की पत्नी वीणा देवी से था। अनंत सिंह के समर्थकों ने पोस्टर लगाए हैं, जिस पर लिखा है– जेल का ताला टूटेगा, मेरा शेर छूटेगा। वहीं, छोटे सरकार के घर पर भोज शुरू हो गया है। विधानसभा के 243 सीटों में 15 सीटें ऐसी हैं, जिन पर खुद बाहुबली या उनके परिवार का कोई सदस्य चुनाव लड़ रहा है। इनमें से 8 बाहुबली एनडीए से किस्मत आजमा रहे थे।

मंत्रियों की सीट

बिहार के सभी 29 मंत्री जीत की ओर

पटना (एजेंसी)। बिहार में एक बार फिर एनडीए सरकार बन रही है। दरभंगा से मंत्री संजय सरावगी और गया टाउन से मंत्री डॉ.प्रेम कुमार 20 हजार वोट से जीत हासिल की है। औपचारिक ऐलान बाकी है। वहीं, धमदाहा सीट से जेडीयू प्रत्याशी और मंत्री लेसी सिंह 50 हजार वोट से निर्णायक बढ़त बना ली है। तारापुर से सम्राट चौधरी और लखीसराय से विजय सिन्हा चुनाव जीत गए हैं। बांकीपुर से मंत्री नितिन नवीन जीत गए हैं। इधर, बीजेपी कोटे से मंत्री रेणु देवी ने एक बार फिर बेतिया से बड़ी जीत दर्ज की है। जाले से जीवेश मिश्र, सीवान से स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे भी जीत गए हैं।

आरएसएस के लिए पाकिस्तानी कंपनी कर रही है काम: कांग्रेस

● पार्टी का बड़ा आरोप,अमेरिका में हितों की पैरवी करती है

संघ का आया बयान,बोला-कोई लॉबिंग फर्म हायर नहीं की

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने गुरुवार को आरोप लगाया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए पाकिस्तान की एक आधिकारिक लॉबिंग कंपनी काम कर रही है। इसे अमेरिका में संघ के हितों की पैरवी करने के लिए हायर किया गया है।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा– कुछ दिन पहले संघ प्रमुख मोहन भागवत ने माना था कि संघ रजिस्टर्ड ऑर्गनाइजेशन नहीं है और वह कोई टैक्स नहीं देता। अब हमें पता चला है कि संघ ने भारी रकम खर्च करके अमेरिकी लॉ फर्म स्क्वायर पैटर्न बॉक्स को हायर किया है। संघ ने कांग्रेस के आरोप को खारिज किया। राष्ट्रीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने

कहा–राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत में काम करता है और अमेरिका में कोई लॉबिंग फर्म नहीं हायर की है।

जनजाति गौरव दिवस ,मुख्यमंत्री जबलपुर में करेंगे भव्य राज्य स्तरीय समारोह का शुभारंभ

जनजातीय प्रतिभाओं को करेंगे सम्मानित,विकास कार्यों का होगा भूमि-पूजन, लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जबलपुर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर जनजातीय गौरव दिवस का भव्य राज्य स्तरीय समारोह का शुभारंभ करेंगे। यहाँ जिलों से निकलने वाली जनजातीय गौरव रथ यात्राओं का समागम होगा। बड़ी संख्या में जनजातीय समुदायों के सदस्य पारंपरिक वेशभूषा और अपने पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ एकत्र होंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कार्यक्रम को गुजरात के नर्मदा जिले से संबोधित करेंगे और विकास परियोजनाओं का शुभारंभ करेंगे। सभी राज्य इस कार्यक्रम से जुड़ेंगे। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह सहित जनप्रतिनिधि एवं जनजातीय समुदाय के प्रतिनिधि विशेष रूप में उपस्थित रहेंगे।इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव जनजातीय गौरव को दर्शाने वाली प्रदर्शनी का शुभारंभ करेंगे।

भारत सबसे तेज बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा

मूडीज का अनुमान 2027 तक 6.5 फीसदी की ग्रोथ से बढ़ेगी इकोनॉमी

जी-20 देशों में सबसे तेज करेगा कमाल,अमेरिकी टैरिफ का असर नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)।नई दिल्ली (एजेंसी)। मूडीज रेटिंग्स ने कहा है कि भारत आने वाले दो साल तक जी-20 देशों में सबसे तेजी से बढ़ने वाली इकोनॉमी बना रहेगा। मूडीज के मुताबिक भारत की जीडीपी ग्रोथ 2027 तक औसतन 6.5 फीसदी रहने का अनुमान है।

रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका के ऊंचे टैरिफ और वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रहेगी। 50 फीसदी अमेरिकी टैरिफ के बावजूद भारतीय निर्यातकों ने सफलतापूर्वक नए बाजार खोजे हैं। सितंबर में भारत का कुल

निर्यात 6.75 फीसदी बढ़ा, जबकि अमेरिका को निर्यात 11.9 फीसदी घटा।

सुरक्षाबलों ने कश्मीर में आतंकी नबी का घर उड़ाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली ब्लास्ट केस में गुरुवार रात सुरक्षा बलों ने पुलवामा में आतंकी डॉ. उमर नबी के घर को आईईडी ब्लास्ट से उड़ा दिया है। गुरुवार को ही डीएनए मैचिंग के बाद इस बात की पुष्टि हुई है कि कार में उमर ही था। उमर पुलवामा के कोइल इलाके में रहता था। पुलिस उसके माता-पिता और भाइयों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

500 लोकेशन पर छापा, 600 से ज्यादा हिरासत में

इधर, सुरक्षा बलों ने पिछले 3 दिन में कश्मीर में 500 लोकेशन पर छापा मारा है। पूछताछ के लिए 600 लोग हिरासत में लिए गए हैं। खुफिया एजेंसियों ने खुलासा किया है अब तक गिरफ्तार 8 आतंकियों ने बताया कि वे 6 दिसंबर यानी बाबरी मस्जिद ढहाने की बरसी के दिन दिल्ली समेत देशभर में कई जगह धमाके करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने 32 कारों का इंतजाम किया था। 10 नवंबर को हुए दिल्ली ब्लास्ट में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 20 लोग घायल हैं, जिनमें से तीन की हालत नाजुक बताई जा रही है।

● स्विफ्ट डिजायर कार डॉ. मुजम्मिल चलाता था- अब पुलिस को जिस चौथी स्विफ्ट डिजायर कार की तलाश है, उसके भी आतंकी मॉड्यूल से जुड़ी होने का शक है। बताया जा रहा है कि यह कार डॉ. शाहीन की है, लेकिन इसका इस्तेमाल डॉ. मुजम्मिल करता था। पुलिस ने फतेहपुरा तगा और धौज में उन घरों के आसपास भी इस कार के बारे में पूछताछ की, जहां 2900 किलो विस्फोटक मिला था। उधर, अब तक लाल रंग की इको स्पोर्ट्स और ब्रेजा कार बरामद हो चुकी हैं, जबकि आई-20 के विस्फोट में परखच्चे उड़ गए थे।

● दिल्ली ब्लास्ट में नूंह से छात्र-डॉक्टर हिरासत में

डॉ. उमर नबी

दिल्ली में लाल किले के पास 10 नवंबर को हुए धमाके के बाद पुलिस और जांच एजेंसियों ने फरीदाबाद की अल-फलाह यूनिवर्सिटी में डेरा जमाया हुआ है। आज एनफोर्समेंट डायरेक्टोरेट के आने की भी उम्मीद है। इसी बीच नूंह से एक डॉक्टर और एक छात्र को जांच एजेंसियों ने हिरासत में लिया है। सूत्रों के मुताबिक, डॉक्टर नूंह जिले के सुनहेड़ा गांव का रहने वाला मुस्तकीम है, जबकि छात्र फिरोजपुर झिरका क्षेत्र के अहमदवास गांव का मोहम्मद है। मुस्तकीम ने चीन से मेडिकल का कोर्स किया था। अब वह अल फलाह यूनिवर्सिटी से एक साल की इंटर्नशिप कर रहा था। मुस्तकीम के चाचा ने बताया कि 2 नवंबर को उसकी इंटर्नशिप पूरी हो गई थी और वह वहां से घर आ गया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एमजी रोड थाने का किया औचक निरीक्षण

इंदौर पुलिस द्वारा आमजन की सुविधाओं के लिए किए जा रहे नवाचारों का किया अवलोकन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को इंदौर भ्रमण के दौरान थाना एमजी रोड का आकस्मिक निरीक्षण किया। उन्होंने थाने की विभिन्न व्यवस्थाओं को देखा तथा थाने के रजिस्टरों को चैक किया। उन्होंने थाने द्वारा की जा रही कार्रवाईयों की जानकारी भी ली। इंदौर पुलिस कमिश्नर श्री संतोष कुमार सिंह ने पुलिस द्वारा आमजन की सुविधाओं के लिए किए जा रहे नवाचारों की जानकारी भी दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने थाना में हेड मोहर्रिर कक्ष का निरीक्षण किया। उन्होंने एफआईआर दर्ज करने की कम्प्युटराईज्ड व्यवस्था को देखा। मौजूद स्टाफ से एफआईआर लिखने की प्रक्रिया की जानकारी ली। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रोजनामचे का भी निरीक्षण किया। दोपहर 12 बजे किये गये निरीक्षण में पाया गया कि अंतिम एंट्री सुबह 11.38 बजे की थी। इस दौरान पाया गया कि एक आरक्षक रिंकू सिंह 8 नवम्बर से बगैर सूचना के अनुपस्थित है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुलिस कमिश्नर को निर्देश दिए कि वे अनुपस्थिति का परीक्षण करें और नियमानुसार कार्रवाई करें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आगन्तुक रजिस्टर का अवलोकन भी किया। पुलिस कमिश्नर श्री संतोष कुमार

सिंह ने बताया कि आमजन की सुविधा और उनके फीडबैक लेने के लिए हर थाने में आगन्तुक रजिस्टर रखा गया है। रजिस्टर में थाने में आने वाले आगन्तुक अपने फीडबैक दर्ज कर सकते है। उन्होंने बताया कि आगन्तुक रजिस्टर के आधार पर फीडबैक देने वाले नागरिकों से पुनः फीडबैक लेने के लिए भी विशेष व्यवस्था है। पुलिस कमिश्नर कार्यालय में इसके लिए एक अलग से फीडबैक सेक्शन बनाया गया है। इस सेक्शन द्वारा हर माह लगभग 5 हजार आगन्तुकों से फीडबैक फोन के माध्यम से लिया जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पुलिस कमिश्नर कार्यालय द्वारा फीडबैक लेने के लिए क्यूआर कोड के संबंध में भी जानकारी दी गई। बताया गया कि कोई भी नागरिक क्यूआर कोड स्कैन कर अपना फीडबैक दे सकते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि थानों में अव्यवस्थित रूप से खड़े वाहनों का निष्पादन किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिये कि थानों में आने वाले प्रत्येक नागरिक की संवेदनशीलता के साथ सुनवाई हो। नागरिकों की सुविधाएं एवं हितों को दृष्टिगत रखते हुए पुलिस पूर्ण दक्षता के साथ कार्य करें।

निरीक्षण के दौरान जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक श्रीमती मालिनी लक्ष्मण सिंह गौड़, पुलिस कमिश्नर श्री संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर श्री शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री दिलीप कुमार यादव, अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर श्री अमित सिंह तथा श्री राजेश कुमार सिंह, श्री सुमित मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि शामिल थे।

श्रम विभाग ने एमपी पावर जनरेटिंग कंपनी के बारह पावर हाउस को दी 5 स्टार श्रम रेटिंग : ऊर्जा मंत्री तोमर

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कम्पनी लिमिटेड ने श्रम कानूनों के उत्कृष्ट अनुपालन और श्रमिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करते हुए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिये श्रम स्टार रेटिंग प्रारंभ की गई है। यह सम्मान संस्थान द्वारा श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रथाओं के अपनाने तथा श्रम कानूनों के प्रति

श्रम विभाग द्वारा कम्पनी के चार ताप विद्युत उत्पादन गृहों व आठ जल विद्युत गृह को 'फाइव स्टार श्रम स्टार रेटिंग' से सम्मानित किया है। यह सम्मान कम्पनी की उच्च कार्यसंस्कृति, पारदर्शिता, शत-प्रतिशत नियामकीय अनुपालन व श्रमिक हितों को सर्वोपरि रखने के दृष्टिकोण का सशक्त प्रमाण है।

यह उपलब्धि पॉवर जनरेटिंग कम्पनी के सतपुड़ा ताप विद्युत गृह सारनी, श्री सिंगाजी ताप विद्युत गृह खंडवा, अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई, संजय गांधी ताप विद्युत गृह बिरसिंगपुर, गांधी सागर जल विद्युत गृह, टोंस जल विद्युत गृह सिरमौर, राजघाट जल विद्युत गृह, बाणसागर जल विद्युत गृह-दो सिलपरा, बाणसागर जल विद्युत गृह-तीन देवलोंद, बाणसागर जल विद्युत गृह-चार झिन्ना, मरहीखेड़ा जल विद्युत गृह और बिरसिंगपुर जल विद्युत गृह को हासिल हुई है।

श्रम विभाग द्वारा श्रम कानूनों के अनुपालन, औद्योगिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रावधानों तथा स्वैच्छिक अनुपालन की प्रतिबद्धता का द्योतक है। गत वर्षों में विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में कम्पनी ने विभिन्न महत्वपूर्ण कीर्तिमान बनाएं है जो की न सिर्फ कम्पनी की नियामकीय प्रतिबद्धता को दर्शाती है, बल्कि श्रमिकों के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की उसकी नीति को भी सशक्त रूप से उजागर करती है।

कम्पनी के प्रबंध संचालक श्री मनजीत सिंह ने इस उपलब्धि पर सभी विद्युत उत्पादन गृहों के मुख्य अभियंताओं, अभियंताओं व कार्मिकों को इस उपलब्धि का श्रेय व बधाई देते हुए कहा-यह सम्मान हमारी कार्यसंस्कृति, अनुशासन और श्रमिक कल्याण के प्रति हमारी निष्ठा का परिणाम है। हमें गर्व है कि न केवल कम्पनी सभी स्तरों पर श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा से संबंधित विभिन्न नीतियां बना रही है, बल्कि हर मानक पर उत्कृष्टता की नई मिसालें भी स्थापित कर रहे हैं, जिसमें सभी कर्मचारियों का योगदान है।

कैलाश सारंग की पुण्यतिथि पर सेवा और सम्मान के कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। भाजपा के संस्थापक सदस्य और वरिष्ठ नेता कैलाश सारंग की पुण्यतिथि एवं प्रसून सारंग की जयंती पर शुक्रवार को 'मातृ-पितृ भक्ति दिवस' के कार्यक्रम आयोजित किए गए। सेवा, संस्कार और समाज के बुजुर्गों के प्रति सम्मान को समर्पित इन आयोजनों में हजारों बुजुर्गों के पांव पखारे गए, उनकी आरती उतारी गई और उन्हें सम्मान-स्मृति भेंट की गई।

विभिन्न स्थानों पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर, खिचड़ी वितरण, केसर युक्त दूध वितरण सहित कई सामाजिक सेवा कार्य किए गए। आयोजकों ने कहा कि समाज का कोई भी बुजुर्ग किसी भी प्रकार की कठिनाई में न रहे, यह हमारा सामूहिक संकल्प है।

जनसंघ से भाजपा यात्रा तक की मजबूत राजनीतिक विरासत- कैलाश सारंग का जन्म 2 जून 1934 को रायसेन जिले के डूमर गांव में हुआ था। जनसंघ के दौर से ही वे संगठन के मजबूत स्तंभ रहे। वे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ लंबे समय तक काम करते रहे और आपातकाल के दौरान मीसाबंदी रहे।

सारंग राज्यसभा के सदस्य 1990 से 1996 तक रहे। वे कायस्थ महासभा के अध्यक्ष भी रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर उन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक 'नरेंद्र से नरेंद्र' लिखी, जिसकी काफी चर्चा हुई थी।

आदि शंकराचार्य गुरूकुलम् विद्यालय एक आदर्श अद्भुत संस्थान होगा : स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह

गाडरवारा के ग्राम पतलोन में गुरूकुलम् के नवीन भवन का भूमिपूजन

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि नरसिंहपुर जिले के गाडरवारा के पतलोन में बनने वाला आदि शंकराचार्य गुरूकुलम् विद्यालय एक आदर्श अद्भुत संस्थान होगा। यह संस्थान जिले में नई शिक्षा नीति के सभी उद्देश्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि 20 करोड़ रूपये की राशि से बनने वाले विद्यालय में निशुल्क छात्रावास की भी सुविधा रहेगी। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह बुधवार को विद्यालय के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

स्कूल शिक्षा मंत्री श्री सिंह ने कहा कि विद्यालय में कक्षा 6 से 12वीं तक के विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के साथ अन्यों विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। विद्यालय में विज्ञान प्रयोग शाला, स्मार्ट क्लास के साथ सभी आधुनिक सुविधाएं

रहेंगी। कार्यक्रम में पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री कैलाश सोनी ने कहा कि ग्राम पतलोन में गुरूकुलम् के भूमिपूजन से सनातन की स्थापना के लिये बहुत बड़ा अनुष्ठान हुआ है। गुरूकुलम् के विद्यार्थी भविष्य में शास्त्री बनेंगे। प्रदेश में केवल 2 संस्कृत केन्द्रों की स्थापना होनी है, उनमें से एक ग्राम पतलोन में है। कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा विभाग के महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान भोपाल के निदेशक श्री रवीन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि यह विद्यालय संस्थान की मदद से खोला जा रहा है। कार्यक्रम को स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने भी संबोधित किया।

ट्रैक पर उतरी सीएमआरएस...चलती मेट्रो में लगाए इमरजेंसी ब्रेक

3 दिन के दौरे पर भोपाल आई; 'ओके' रिपोर्ट पर नवंबर में ही कॉमर्शियल रन की उम्मीद

भोपाल (नप्र)। कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी (सीएमआरएस) की टीम अब मेट्रो के ट्रैक पर भी उतर आई है। शुक्रवार को सुबह 10 बजे से टीम का निरीक्षण शुरू हो गया है, जो शाम तक चलता रहा। शाम 4.30 बजे टीम मेट्रो में सवार हुई। इस दौरान एमपी नगर और रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के बीच चलती मेट्रो में इमरजेंसी ब्रेक लगाकर सिस्टम जांचा गया।

टीम ने सुभाषनगर, केंद्रीय स्कूल, डीबी मॉल और डीआरएम तिराहा स्टेशन पर भी ब्रेकिंग सिस्टम जाना। इस दौरान मेट्रो में कमिश्नर नीलाभ्र सेनगुप्ता भी मौजूद रहे। बता दें कि सीएमआरएस की टीम नई दिल्ली से भोपाल में 3 दिन के दौरे पर आई है। गुरुवार को डिपो, एम्स स्टेशन तक

ट्रैक, सिंगलिंग और सुरक्षा पैमानों पर जांच की। वहीं, आरकेएमपी स्टेशन पर पानी गिराकर ट्रैक लेवल भी चेक किया गया। ताकि ढाल और जल निकासी की स्थिति का आकलन किया जा सके। सुभाषनगर डिपो में पूरे प्रोजेक्ट की रिपोर्ट भी देखी थी। पहले दिन करीब 8 घंटे तक दौरा चलता रहा।

दूसरे दिन सुबह 10 बजे से निरीक्षण शुरू- दूसरे दिन, शुक्रवार को सुबह 10 बजे से निरीक्षण शुरू हो गया। शाम 4 बजे तक निरीक्षण का शेड्यूल तय था, लेकिन इसके बाद तक निरीक्षण चलता रहा। इस दौरान टीम मेट्रो ट्रेन में सवार होकर ट्रैक पर भी पहुंची। ताकि, ट्रेन के अंदर से ही कई तकनीकी पहलुओं पर नजर डाली जा सके। कई पैमानों पर पड़ताल की गई। टीम ने हर बिंदू को नोट किया।

क्या है सीएमआरएस की भूमिका?- सीएमआरएस किसी भी मेट्रो प्रोजेक्ट के लिए सुरक्षा की अंतिम स्वीकृति देते हैं। उनकी रिपोर्ट के बाद ही मेट्रो पर यात्रियों का संचालन शुरू किया जा सकता है। गुरुवार को सीएमआरएस की टीम ने रानी कमलापति रेलवे स्टेशन के पास ट्रैक पर पानी रहकर ढलान की स्थिति देखी थी।

पहली बार भोपाल आए हैं कमिश्नर

मेट्रो कमिश्नर नीलाभ्र सेनगुप्ता भी टीम के साथ मौजूद हैं। वे पहली बार बतौर मेट्रो कमिश्नर भोपाल पहुंचे हैं। उनसे पहले जनक कुमार गर्ग कमिश्नर थे, जो रिटायर्ड हो गए। हालांकि, टीम पुरानी ही है। ऐसे में मेट्रो के कॉमर्शियल रन को लेकर ज्यादा अड़चनें नहीं है।

अक्टूबर में था टारगेट, अब नवंबर में दौड़ेंगी

बता दें कि इससे पहले सरकार ने अक्टूबर में भोपाल में मेट्रो दौड़ने का टारगेट रखा था। इसलिए सितंबर और अक्टूबर में सीएमआरएस के दो अहम दौरे भी हो चुके हैं। पूर्व मेट्रो कमिश्नर गर्ग ने टीम के साथ सुभाष नगर स्थित मेट्रो डिपो और प्रायोरिटी कॉरिडोर के 6.22 किलोमीटर रूट को देखा था। वे ट्रेन में सवार हुए। सुभाषनगर और एम्स स्टेशन पर करीब दो घंटे तक निरीक्षण किया था। अब तीसरा और सबसे अहम दौरा है, जो बुधवार से ही शुरू हो गया है। गुरुवार-शुक्रवार को कमिश्नर टीम के साथ मैदान में उतरे। बिहार चुनाव की वजह से अक्टूबर में मेट्रो का कॉमर्शियल रन नहीं हो सका था। ऐसे में अब उम्मीद है कि नवंबर में मेट्रो आम लोगों के लिए ट्रैक पर दौड़ने लगेगी।

आह ताहिर कमाल!

जावेद आलम

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व अनुवादक हैं)

तुम तो ऐसे गए, ऐसे जाता है कोई...!

स्वतंत्र पत्रकार व पुर-कशिश शख्सियत ताहिर कमाल सिद्दीक़ी की याद में

बीते माह (अक्टूबर 2025) का आखिरी सप्ताह था। दिन के कोई ढाई बजे होंगे कि भतीजे जाज़िब जुनैद का फ़ोन आया। चिंतित लहजे में उसने कहा, 'ज़रा ग्रुप देखिए। यह क्या मैसेज आया है? क्या यह वही अपने ताहिर कमाल साहब हैं? उनका इंतक़ाल हो गया?'

बात कुछ ऐसी थी कि फ़ौरन ही फ़ोन देखना पड़ा। ख़बर वही थी, जो जाज़िब ने बताई थी। अविश्वसनीय, उदास कर देने वाली। कैसे हो गया...! थोड़े समय, यही कोई माह-डेढ़ माह पहले बात हुई होगी। अच्छा-ख़ासा था बंदा। वही खुश मिज़ाजी, वाक पटुता, शोख़ी। लोगों और हालात पर दिलचस्प टिप्पणियां। 'जल्दी मिलते हैं,' पर बातें ख़त्म हुई थीं। पर ऐसे मिलेंगे... नम आंखें लिए मैं सोचता रहा। व्यापार-व्यवसाय के केंद्र इंदौर के प्रतिष्ठित और नामवर सिद्दीक़ी घराने का रौशन सितारा था ताहिर कमाल सिद्दीकी। क़ाज़ी वलीउल्लाह सिद्दीक़ी नदवी साहब (रह.) का सबसे छोटा बेटा। वलीउल्लाह साहब इंदौर की तारीख़ी 'कच्ची मस्जिद' के 54 साल से ज़्यादा अरसे तक पेश इमाम (नमाज़ पढ़ाने वाले) रहे। फ़क़ीराना मिज़ाज वाले इंसान थे। बहुत नेक। ऐसी इज़्ज़त व नामवरी पाई कि मुझ जैसे हज़ारों लोग, जिन्हें वे नहीं जानते थे, उन पर निस्वार्थ श्रद्धा रखते हैं।

आज का जो चलन है, उसी के मुताबिक़ सोशल मीडिया पर ताहिर कमाल के लिए शोक संदेश, तारीफ़ी मैसेजेस का तांता लग गया। उन संदेशों के बीच दिल के मशहूर डॉ. मुहम्मद अली का मैसेज भी था, जिसके मुताबिक़ मर्हूम (दिवंगत) ने दिल के इलाज में लापरवाही बरती और जान दे कर इसकी क़ीमत चुकाई। मगर इस कथित लापरवाही की एक वजह उसी वाट्स एप ग्रुप के एडमिन व पत्रकार जावेद ख़ान ने जब बताई तो बहुत-से दिल लरज़ गए। बहुत-सी आंखें रो पड़ीं।

उन्होंने लिखा कि थोड़े वक्त पहले ताहिर कमाल उनसे मिले थे। दिल की बीमारी को लेकर फ़िक्रमंद थे। अपने क़रीबी समर्थ लोगों के रवैये से दुखी कि कोई उनकी मदद को आगे नहीं आ रहा। और कुछ नहीं, पर मेरे बच्चे छोटे हैं। मुझे पक्का पता है, उसने साफ़ कहा होगा, कहता ही था कि अपनी जान चली जाए, कोई ऐसी ख़ास बात नहीं। जान में क्या रक्खा है। अल्लाह की अमानत है, एकदिन जाएगी ही। मुझे अपनी नहीं बच्चों की फ़िक्र ज़रूर है। हालांकि उनका भी अल्लाह है। जावेद ख़ान ने यह भेद खोल कर बहुत से दिलों को बहुत-बहुत उदास कर दिया कि उस दिन वह उनके सामने रोया भी।

ताहिर कमाल सिद्दीक़ी स्वतंत्र पत्रकार था। ग़ैरतमंद व ख़ुद्दार था। स्थाई कोई आय का स्रोत नहीं था उसका। विभिन्न कार्यक्रमों की रिपोर्टिंग व यदा-कदा मिलने वाले कार्यक्रम के संचालन जैसे कामों से उसका घरबार चलता था। सफ़ेदपोशी का ऐसा भ्रम रखता था कि मजाल कोई उसकी अंदरूनी हालत जान जाए। हम जैसे भी, जिन्हें दोनों ओर से 'अपना' होने का गुमान है। दुख यह है कि जिनके सामने उसने अपना यह भ्रम तोड़ दिया, वे पत्थर-दिल निकले। बाद में ज़रूर एक ग्रुप पर उसके वारिसों, ख़ासकर बच्चों के भविष्य की चिंता में सिक्के खड़काए जाने लगे। सही है कि ताल्लुक़ात होते हुए भी हम लोग ताल्लुक़-विहीन रहने को अभिशप्त हैं। इसलिए बहुत से लोग उसके असली हालात से बेख़बर रह गए।

इन पंक्तियों के लेखक की जब इंदौर आमद हुई तो पहले-पहल जिन लोगों से वास्ता पड़ा, उनमें यह महोदय ताहिर कमाल सिद्दीक़ी भी थे। युवावय, सुंदर, खुश मिज़ाज व बातूनी। उर्दू और हिंदी के जानकार। दोनों ही भाषाओं में ख़बर-निगारी करने, अच्छी ज़ुबान लिखने वाला बंदा। तब वह हिंदी के स्थानीय व प्रतिष्ठित दैनिक 'नईदुनिया' में बतौर स्वतंत्र पत्रकार लिखा करता था। साथ ही उसकी ख़बरें दीगर स्थानीय अख़बारों को भी सुशोभित करतीं। उनमें उर्दू के अल्फ़ाज़ बहुत सुंदरता से इस्तेमाल करना ताहिर कमाल की ऐसी ख़ूबी थी, जिसके एक बड़ा तब्क़ा प्रशंसक था। रमज़ान मुबारक के पवित्र महीने में रोज़े-रमज़ान को लेकर पूरे माह छपने वाले उसके जानकारी परक लेख बड़े चाव से पढ़े जाते थे। बाद में वह उर्दू दैनिक 'नया नज़रिया' के लिए भी लिखने लगा था।

लेखन के अलावा सुंदर, प्रेसबंद कपड़े व हास्य इस बंदे की दूसरी पहचान थे। पहनावे व रख-रखाव से ऐसा सलीक़ा झलकता कि नवाब शरमा जाएं। मगर निजी जीवन में यह शख़्स ऐसा लापरवाह निकलेगा कि ज़िंदगी यूं दान कर जाए, किसी ने ऐसा सोचा नहीं होगा।

यह बेफ़िक्रापन उसके काम में भी झलकता था। बतौर स्वतंत्र पत्रकार ज़िंदगी करना कितना मुश्किल है, मुझ समेत यह जानने वाले दोस्तों ने चंद बार उसके लिए आय के स्थाई साधन या अच्छे काम की व्यवस्था की। मगर प्रकृतिदत्त बेफ़िक्रेपन ने, काम पर गंभीरता से ध्यान न देने की प्रवृत्ति ने उसे ख़ासा नुक़सान पहुंचाया। क़रीबी लोग उसकी इन कमज़ोरियों से ख़ूब परीचित थे, निंदक और चिंतित भी।

ताहिर कमाल सिद्दीक़ी महज़ एक सहाफ़ी, पत्रकार ही नहीं, इंसानों को अच्छे से जानने-समझने वाला भी था। शहर के साथ ही उसके बाशिंदों का भी मिज़ाज समझने वाला। लोगों की दर्जाबंदी उसने उनकी विशेष प्रवृत्तियों के साथ कर रखी थी। अक्सर ज़िक्र करताः फ़ुलां साहब को पूरे संसार से शिकायतें हैं। इतनी लंबी क़व्वाली सुनाते हैं कि वाह और आह करते-करते थक जाओ। उनके दुखड़े ही ख़त्म नहीं होते। किसी के बारे में कहता, ख़ुद को सदाचारी बताने का ऐसा जुनून है कि बाक़ी हर इंसान को नर्कवासी बता देते हैं। बमुश्किल जान छुड़ा कर आया हूं। अब परनिंदा भी कहां तक बर्दाश्त करो!

शहर के एक धनवान की बाबत कहने लगा, जनाब को भ्रम है कि अल्लाह तआला ने उन्हें संपूर्ण अधिकार सौंप दिए हैं। उनका बस चले तो पूरे संसार को सूली पर चढ़ा दें। बस उन्हें ही बख़्शें, जो उनकी हां में हां मिलाते हैं।

वैसे बातूनी था, मगर सबसे खुलने वाला भी नहीं था। शहर भर से उसका परिचय था। सबसे खुल जाता तो ज़िंदगी कैसे करता! हालात व वाक़िआत का ख़ज़ाना उसके पास होता। बाख़बर, मगर लापरवाह। इसलिए गंभीर पत्रकारिता पर ध्यान न दिया। वज़ीर से लेकर फ़क़ीर तक से उसके ताल्लुक़ात थे, कभी इसका फ़ायदा न उठाया। ऐसे सतही दौर में जब सतही क़िस्म के लोग किसी वज़ीर, अमीर की महंगी गाड़ी में घूम लेने को बड़ी भारी उपलब्धि समझ रहे हों, वह उनके साथ रहते हुए निर्लिप्त रहता।

नफ़ासत-पसंदी उसकी तबीअत में ऐसी थी कि मजाल है कपड़ों पर कोई सिलवट नज़र आ जाए। यही देख कर किसी ने टिप्पणी की थी, यार! ये ताहिर कमाल क्या सोता भी प्रेसबंद कपड़ों में है! यही नफ़ासत, सलीक़ा उसकी बातचीत, तौर-तरीक़ों में झलकता। अल्फ़ाज़ का चयन सोच-समझ कर करना उसकी एक और ख़ूबी थी। कंपेयरिंग के मद्देनज़र मौक़े के लिहाज़ से ढेरों शे'र भी उसे कंठस्थ थे।

शहर बदमाश हो जाते हैं। कभी-कभी शैतानी और हिंसा पर उतारू। हो सकता है ऐसी ही किसी बदमाशी की लहर में शहर ने जानबूझ कर उसकी मदद न की हो। वरना हर किसी को उसकी ख़ूबी-ख़ामी के साथ पहचानने वाले एक नफ़ासत-पसंद, वाक पटु, सलीक़ेमंद, अहानिकारक क़िस्म के इंसान को यूं दुखी व उदास, तन्हा नहीं छोड़ता।

गहरी उदासी के बीच उसका आख़िरी सफ़र याद आता है। मदीना नगर की तंग गलियां और जनाज़े में उसके चाहने वालों का हुजूम। इतनी भीड़ कि उसे कांधा दे पाना, पनघट की डगर पार करने से कठिन था। हौले-हौले सरकते जा रहे जनाज़े को देख बहुत दुखी दिल से मैंने कहा- 'अलविदा ताहिर कमाल! अब वहां तक नहीं पहुंच पाऊंगा शायद। तुम्हें कांधों पर ले जाना अपने बस का काम नहीं लग रहा। हां तुम साथ होते तो ज़रूर कोई राह निकालते। वैसे ही जैसे भीड़ भरे कई मौक़ों पर तुमने 'ताहिर (पवित्र) कमाल' दिखाया था।'

आह जैसे सीधे आसमान तक पहुंची। रास्ता बनने लगा और मामूली-सी जद्दोजहद के बाद वह बोझ मेरे कांधों पर था, जिसे कोई भी अपनी राज़ी-ख़ुशी से नहीं उठाना चाहता। मद्धिम रौशनी वाली, संकरी और बीच-बीच में कीचड़ वाली उन्हीं गलियों से हम उसे लिए बढ़ते चले जा रहे थे, जहां उसने ज़िंदगी गुज़ारी।

कुछ देर बाद आज़ाद नगर की कुछ खुली सड़क आ गई तो थोड़ी राहत मिली। इसके बावजूद दूसरी बार कांधा देने की कोशिश मुश्किल का मैदान था। बहुत सारे लोग थे। सब अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी से एक ऐसा बोझ बांटना चाहते थे, जो उन्हें अपना लग रहा था। इस पड़ाव के बाद आने वाले वक़्त में भी जन्नत-मकानी ताहिर कमाल के लिए ऐसा जज़्बा बाक़ी रहे तो कुछ बात बने।

संपादकीय

एसआईआर सुचारू ढंग से चले

मध्यप्रदेश में देश के अन्य राज्यों के साथ मतदाता सूचियों का एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) 4 नवंबर से प्रारंभ तो हो गया है, लेकिन जमीनी स्तर से जो रिपोर्ट आ रही हैं, उससे लगता है कि यह काम अपेक्षित सुचारू और व्यवस्थित तरीके से नहीं हो पा रहा है। हालांकि मप्र के मुख्य निर्वाचन अधिकारी संजीव कुमार झा ने एसआईआर में लगे सभी बीएलओ और अन्य स्टाफ को एसआईआर का काम पूरी जिम्मेदारी और समय पर करने को कहा है। उधर एसआईआर को राजनीतिक मुद्दा बना रही कांग्रेस ने एसआईआर की पूरी कार्यवाही की मॉनिटरिंग के लिए 8 सदस्यीय कमेटी का गठन किया है। पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा को इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया है। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने गठित कमेटी से कहा है कि पूरे एसआईआर कार्यक्रम की प्रभावी मॉनिटरिंग के लिए इसमें कोआर्डिनेशन का काम भी कमेटी में शामिल सदस्य और पार्टी नेता करेंगे। गौरतलब है कि मप्र में चुनाव आयोग के निर्देशानुसार एसआईआर की कार्रवाई औपचारिक तौर पर 28 अक्टूबर से ही प्रारंभ हो गई थी। जिसके तहत फार्म प्रिंटिंग व ट्रेनिंग का काम 3 नवंबर तक चला। जबकि 4 नवंबर से बीएलओ द्वारा घर-घर जाकर मतदाता सूची का सत्यापन प्रारंभ कर दिया गया है। यह काम 4 दिसंबर तक चलेगा। मतदाता सूची पर दावे आपत्तियों पर सुनवाई के बाद अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 7 फरवरी को होगा। वर्तमान में मप्र में कुल 5 करोड़ 74 लाख मतदाता है। बहरहाल एसआईआर प्रक्रिया को लेकर कई शिकायतें सामने आई हैं। मसलन जिस फर्म को गणना पत्रक छापने का टेंडर दिया गया, वह समय पर काम खत्म नहीं कर पाई। राज्य में कई जगह से यह शिकायत आ रही है कि इस महाअभियान में बीएलओ को बिना गणना पत्रक (एन्यूमरेशन शीट) के ही मैदान में उतार दिया गया। बताया जाता है कि इंदौर की जिस फर्म को गणना पत्रक छापने का टेंडर दिया गया, उसने समय पर इन्हें नहीं छापा। इसकी वजह से आयोग का डोर-टू डोर अभियान पिछड़ गया है। जिस फर्म को ये ठेका मिला है, उसका कहना है कि जिलों के निर्वाचन कार्यालयों की तरफ से डेटा मांगा गया था। उन्होंने जानकारी समय पर नहीं दी। जिन्होंने जानकारी दी, वो भी आधी अधूरी दी। कई जिलों के अफसरों ने तो मतदाता सूची के बंडल ही गायब कर दिए। बीएलओ को आईपैड और टैबलेट इसलिए दिया है, ताकि वे 2003 की पुरानी वोटर लिस्ट और 2025 की नई वोटर लिस्ट के डेटा का मिलान कर सकें। चुनाव आयोग का नियम है कि बिना फॉर्म पर मतदाता के हस्ताक्षर के डेटा को ऐप में एंट्री नहीं किया जा सकता। ऐसे में कई बीएलओ को या तो अपना काम रोकना पड़ा या फिर पुराने ड्राफ्ट फॉर्म के सहारे अस्थायी रूप से जानकारी जुटानी पड़ी। फार्म छापने में देरी की एक वजह डाटा ट्रांसफर में आई दिक्कतें भी है। कुछ जिलों से भेजी गई पीडीएफ फाइलें डाउनलोड हो रही थीं, तो कुछ नहीं हो रही थीं। इस पर आयोग ने स्टाफ को सभी जिलों में भेजकर पेन ड्राइव और हार्ड डिस्क के माध्यम से डेटा मंगवाया। कुछ जिलों में फार्म का बंडल गुमने तो कुछ फार्म गायब होने की भी शिकायतें हैं। चुनाव आयोग के एक नए नियम ने भी फील्ड में मुश्किलें बढ़ा दी हैं। इस बार बीएलओ केवल वही व्यक्ति बन सकता है, जिसका नाम उसी बूथ की मतदाता सूची में हो या जो उसी वार्ड का कोई सरकारी कर्मचारी हो। सालों से यह काम कर रहे अनुभवी लोगों की जगह नए बीएलओ की नियुक्ति की गई है, जिन्हें सिस्टम की ठीक से जानकारी नहीं है। हालांकि आयोग इन शिकायतों का संज्ञान ले रहा है।

नजरिया

अजय कुमार

लेखक लखनऊ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

लोकतंत्र के सबसे बड़े उत्सव कहे जाने वाले चुनावों में बिहार ने इस बार जो फैसला दिया, उसने देशभर के राजनीतिक विश्लेषकों को चौंका दिया। राज्य की जनता ने जातीय समीकरणों और पारंपरिक परिवारवाद की राजनीति से ऊपर उठकर स्पष्ट रूप से विकास, नेतृत्व और स्थिरता को प्राथमिकता दी। परिणाम यह रहा कि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार और भारतीय जनता पार्टी की गठबंधन सरकार को भारी बहुमत मिला, जबकि यादव और गांधी परिवार का प्रभाव लगभग समाप्त होता दिखा। तेजस्वी यादव, राहुल गांधी और अखिलेश यादव जैसे चेहरों का कथित सेक्युलर गठबंधन इस बार मतदाताओं को भरोसा दिलाने में नाकाम रहा। राज्य में कुल 243 विधानसभा सीटों में से एनडीए ने करीब 175 सीटें हासिल कर ऐतिहासिक प्रदर्शन किया। इसमें भाजपा के खाते में 99 सीटें आई, जबकि जनता दल यूनाइटेड ने 68 सीटें जीतीं। इसके अलावा छोटे सहयोगी दलों, हम, वीआईपी और रालोसपा को भी कुल मिलाकर आठ सीटें मिलीं। इस जीत ने न केवल नीतिश कुमार की साख दोबारा मजबूत कर दी बल्कि भाजपा को भी बिहार की राजनीति में निर्णायक स्थिति में पहुंचा दिया। दूसरी ओर, महागठबंधन के लिए यह चुनाव लगभग विनाशकारी साबित हुआ। राजद मात्र 35 सीटों पर सिमट गया, कांग्रेस 7 पर और वामदलों को कुल मिलाकर सिर्फ 5 सीटें मिलीं। यही नहीं महागठबंधन के सीएम फेस और राजद नेता तेजस्वी यादव भी अपने चुनाव क्षेत्र में बार बार पीछे हो रहे हैं, यदि तेजस्वी जीतते भी हैं तो उनकी जीत का अंतर काफी कम रहने वाला है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज विदेश में घूम रहे हैं जबकि उनको अपने कार्यकर्ताओं को ढांढस बनाने के लिये उनके बीच मौजूद होना चाहिए था। एनडीए को सभी वर्गों के वोट मिले यही वजह थी जेडीयू के मुस्लिम प्रत्याशी भी मैदान में अच्छा प्रर्दशन करते हुए दिखाई दिये।तेजस्वी यादव के लिए यह परिणाम एक बड़ा झटका है। वे लगातार अपनी राजनीति को युवाओं के ने और रोजगार के मुद्दे पर केंद्रित करते हुए बिहार में बदलाव की बात कर रहे थे। लेकिन जनता ने उन्हें अवसर देने से इनकार कर दिया। चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और महंगाई को मुख्य मुद्दा बनाया, परंतु एनडीए ने इसे विकास बनाम जातिवाद की लड़ाई के रूप में पेश किया और इसी रणनीति ने सभी जातीय गणनाओं को ध्वस्त कर दिया। यादव मतदाताओं के अलावा अन्य पिछड़ी जातियों, दलितों और अति पिछड़ों का बड़ा वर्ग इस बार पहली बार पूरी मजबूती से एनडीए के पक्ष में खड़ा दिखा।

राहुल गांधी और अखिलेश यादव की संयुक्त रैलियाँ भी जमीन पर असर नहीं डाल पाईं। राहुल गांधी की सभाएँ सीमित भीड़ में सिमटकर रह गईं और कांग्रेस की संगठनात्मक कमजोरी फिर एक बार उजागर हो गई।

बिहार में जातीय समीकरणों की राजनीति से ऊपर का फैसला

महागठबंधन के लिए यह चुनाव लगभग विनाशकारी साबित हुआ। राजद मात्र 35 सीटों पर सिमट गया, कांग्रेस 7 पर और वामदलों को कुल मिलाकर सिर्फ 5 सीटें मिलीं। यही नहीं महागठबंधन के सीएम फेस और राजद नेता तेजस्वी यादव भी अपने चुनाव क्षेत्र में बार-बार पीछे हो रहे हैं, यदि तेजस्वी जीतते भी हैं तो उनकी जीत का अंतर काफी कम रहने वाला है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी आज विदेश में घूम रहे हैं जबकि उनको अपने कार्यकर्ताओं को ढांढस बनाने के लिये उनके बीच मौजूद होना चाहिए था। एनडीए को सभी वर्गों के वोट मिले यही वजह थी जेडीयू के मुस्लिम प्रत्याशी भी मैदान में अच्छा प्रर्दशन करते हुए दिखाई दिये। तेजस्वी यादव के लिए यह परिणाम एक बड़ा झटका है। वे लगातार अपनी राजनीति को युवाओं के ने और रोजगार के मुद्दे पर केंद्रित करते हुए बिहार में बदलाव की बात कर रहे थे। लेकिन जनता ने उन्हें अवसर देने से इनकार कर दिया।

महागठबंधन के कई उम्मीदवार खुद स्थानीय स्तर पर प्रचार के लिए अपने दम पर संघर्ष करते दिखाई दिए। वहीं भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह की जोड़ी के नेतृत्व में प्रचार को आक्रामक अंदाज में चलाया। पटना, गया, दरभंगा, भागलपुर और बक्सर जैसे जिलों में मोदी की सभाओं में भारी भीड़ ने इस बात के संकेत पहले ही दे दिए थे कि मतदाताओं का झुकाव केंद्र की योजनाओं और मजबूत नेतृत्व की ओर है।

की पकड़ को मजबूत किया। इसके अलावा, कानून व्यवस्था में सुधार और नीतिश कुमार की छवि अब भी सुशासन बाबू के रूप में लोगों के मन में कायम रही।

दूसरी ओर, युवा मतदाताओं ने तेजस्वी यादव की बातों को दिलचस्प तो पाया, लेकिन अनुभवहीनता और अतीत में उनके परिवार पर लगे आरोपों ने उन्हें पूरी तरह समर्थन नहीं दिया। लालू प्रसाद यादव के समय की पिछली राजनीतिक यादें जंगलराज, अपराध और परिवारवाद अभी

नीतिश कुमार के लिए यह चुनाव साख बनाम थकान की लड़ाई कहलाया जा रहा था। कई विश्लेषकों ने दावा किया था कि नीतिश के पक्ष में एंटी इंकम्बेंसी विरोधी लहर काम करेगी, लेकिन अंतिम परिणाम ने सभी आकलनों को गलत साबित कर दिया। एनडीए ने करीब 46 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया, जबकि महागठबंधन 38 प्रतिशत पर सिमट गया। इसका अर्थ यह हुआ कि बिहार की जनता ने स्थिर प्रशासन और राजनीतिक परिपक्वता को जातीय समीकरणों से ऊपर रखा। ग्रामीण इलाकों में एनडीए की योजनाओं का सीधा असर दिखा। प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला गैस कनेक्शन और हर घर नल योजना जैसे प्रोजेक्ट्स ने महिलाओं और गरीब तबके को सीधे लाभ पहुँचाया। इन्हीं स्कीमों ने घर घर में भाजपा और जेडीयू

भी बिहार के मतदाताओं के मन में ताजा हैं। यही कारण रहा कि तेजस्वी की परिवर्तन यात्रा का असर सीमित इलाकों तक ही रहा। राहुल गांधी की भूमिका भी महागठबंधन में केवल प्रतीकात्मक दिखी। कांग्रेस ने अपने पारंपरिक गढ़ जैसे सासाराम, कटिहार और किशनगंज में भी हार का सामना किया। पार्टी का वोट शेयर घटकर मात्र 6.5 प्रतिशत रह गया। इस पराजय के साथ ही कांग्रेस का राज्य स्तर पर भविष्य बेहद धुंधला होता दिखाई दे रहा है। अखिलेश यादव ने भी महागठबंधन के समर्थन में कुछ सभाएँ कीं, मगर उनका प्रभाव सीमित रहा। उत्तर प्रदेश की राजनीति से लेकर बिहार की जातीय संरचना तक, उनका हस्तक्षेप मतदाताओं पर असर छोड़ने में नाकाम रहा। बिहार के मतदाताओं ने साफ संदेश दिया कि उन्हें बाहरी नेताओं के भावनात्मक भाषणों की जगह स्थानीय मुद्दों पर ठोस जवाब चाहिए।

इस चुनाव का एक दिलचस्प पहलू यह भी रहा कि महिलाओं ने इस बार रिकॉर्ड संख्या में मतदान किया। महिला वोटिंग प्रतिशत 61 प्रतिशत तक पहुंचा, जो पुरुषों की तुलना में तीन प्रतिशत अधिक था। नीतिश कुमार ने कुछ महीनों पहले महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर विशेष योजनाएं शुरू की थीं, जिनका असर मतदान में साफ तौर पर दिखा। भाजपा की महिला कार्यकर्ताओं ने भी ग्रामीण स्तर पर संगठन मजबूत करने में बड़ा योगदान दिया। अब सवाल यह है कि इस बंपर जीत के बाद बिहार की राजनीति किस दिशा में जाएगी। नीतिश कुमार आठवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं और भाजपा ने भी स्पष्ट कर दिया है कि वह मिलकर स्थिर सरकार चलाएगी। हालांकि पार्टी के अंदर कुछ नेता चाहते हैं कि धीरे-धीरे भाजपा राज्य नेतृत्व में प्रमुख भूमिका निभाए। बिहार में यह संभवतः उस नए चरण की शुरुआत होगी जहाँ भाजपा मैदान में मुख्य भूमिका में उभरेगी और जेडीयू सहयोगी की भूमिका निभाएगी।

महागठबंधन में निराशा का माहौल है। तेजस्वी यादव अब संगठनात्मक सुधार की बात कर रहे हैं और पार्टी को नए सिरे से खड़ा करने का संकल्प जता रहे हैं। मगर चुनौती यह है कि मतदाता अब पारिवारिक राजनीति के बजाय नए चेहरों, गंभीर योजनाओं और ठोस नीतिगत दृष्टिकोण को महत्व देने लगे हैं। राहुल गांधी और कांग्रेस के लिए भी यह चुनाव साफ चेतावनी की तरह है कि बिना जनाधार, बिना संगठन और बिना मजबूत नैरेटिव के केवल गठबंधन के भरोसे सत्ता तक पहुँचना नामुमकिन है। इस तरह बिहार चुनाव 2025 केवल एक राजनीतिक मुकाबला नहीं बल्कि एक युगांतकारी जनादेश बन गया, जिसने परिवार आधारित राजनीति, जातिगत समीकरणों और भावनात्मक भाषणों की जगह नीति, प्रशासन और प्रदर्शन को प्राथमिकता दी। बिहार की जनता ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब न उन्हें नाम चाहिए, न वंश, बल्कि काम करने वाला नेतृत्व चाहिए। यह परिणाम न केवल राज्य की राजनीति बल्कि भारत के आने वाले चुनावी परिदृश्य के लिए भी संकेत देता है कि परिवारवाद का दौर धीरे धीरे खत्म हो रहा है और जनता अब केवल उसी को पसंद करेगी जो उनका भरोसा जीत सके।

विश्लेषण

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

बिहार का जनादेश, सुशासन और नेतृव का संदेश

बिहार चुनाव की तस्वीर साफ हो चली है। एनडीए गठबंधन एक बार फिर बिहार में स्थिर सरकार देने को तैयार है। जबकि विपक्ष की चुनावी रणनीति पूरी तरह फिसल गयी है। विपक्ष बिहार में जंगलराज की बात भले प्रचारित किया, लेकिन जनता ने भाजपा और जदतादल (यू) नितीश और मोदी की जोड़ी पर भरोसा जताया। बिहार के लोगों ने सुशासन बाबू को दिल से लिया। एनडीए गठबंधन पिछले चुनाव का भी रिकॉर्ड तोड़ दिया है। जबकि प्रमुख विपक्षी दल आरजेडी और महागठबंधन पूरी तरह पराजित हुआ है। तेस्जवी यादव की नेतृत्व वाली आरजेडी का प्रदर्शन पिछली बार की अपेक्षा से भी घटिया रहा है। विपक्ष जहां चुनावी माहौल सिर्फ हवा में बनाता रहा वहीं भाजपा जमीनी स्तर पर उतरकर वहां अपनी स्थिति मजबूत किया है। दूसरी तरफ एनडीए लगातार सत्ता में बनी रही जिसका उसे फायदा मिला है।

कांग्रेस जैसे बड़े राष्ट्रीय दल से भी कई गुना अच्छा प्रदर्शन लोजपा चिराग पासवान की पार्टी ने किया है। बिहार का चुनाव राजनीति के लिए साफ संदेश है। बिहार का चुनाव परिणाम किसी राजनीतिक दल की हार और जीत का परिणाम नहीं, बल्कि जनता के जनादेश का परिणाम है। राहुल गाँधी, तेजस्वी यादव और अखिलेश यादव को इस बात को समझना चाहिए कि सिर्फ हवा में आरोप लगाकर आप सत्ता नहीं हासिल कर सकते हैं। जनता विकास चाहती है, हवाई नारों पर वह विश्वास करने वाली नहीं है। बिहार की जनता ने कम से कम यह साफ संदेश दे दिया है।

बिहार का जनादेश, बदलाव की दिशा में नया संदेश है। बिहार की जनता ने एनडीए के सुशासन पर अधिक भरोसा जताया है। बिहार में सच्चाई है कि वहां विकास हुआ है और लोगों को जंगलराज से राहत मिली। विपक्ष के लिए है चिंता और चिंतन का सवाल है। राहुल गांधी को अब जमीनी राजनीति करनी चाहिए। सिर्फ तालियां पिटवाने की राजनीति से उन्हें बाज आना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ उन्होंने जितना निजी हमला किया। उसका परिणाम सकारात्मक होने के बजाय नकारात्मक आया। कांग्रेस अपनी जड़ और जमीन दोनों खो दिया है। कांग्रेस और उसका नेतृत्व कब समझेगा यह विचारणीय बिंदु है। सिर्फ जुमले और नारों से आप जमीन नहीं बदल सकते हैं। जनता जमीन पर बदलाव देखना चाहती है। लालू यादव के कुशासन और जंगल राज की तस्वीर आज उसके जेहन में चस्पा है। जिसकी वजह से तेजस्वी यादव को लोगों ने नकार दिया है। दूसरी वजह लालू यादव के पारिवारिक झगड़ों के साथ महागठबंधन में रणनीति की कमी और आंतरिक बिखराव इसका सबसे बड़ा कारण है।

बिहार की जनता ने 20 सालों पर नितीश पर भरोसा जताया है। बिहार में नीतीश और मोदी की जोड़ी ने सिर्फ नारे नहीं लगाए गए जमीन पर काम भी किया। जिससे बिहार की जनता को सीधा फायदा मिला है राजनीतिक दलों के लिए बिहार चुनाव बड़ा संदेश है। बिहार विधानसभा चुनाव परिणामों ने यह साबित किया कि है यहाँ की राजनीति अब सिर्फ जात-पात और संप्रदाय तक सीमित नहीं रही, बल्कि विकास, पर आधारित है। महिला मतदाता ने निर्णायक भूमिका निभाई है। दो चरणों में मतदान हुआ जिसमें दूसरे

चरण में 69 फीसदी तक मतदाताओं की हिस्सेदारी इस बात का संकेत है कि बिहार कि जनता सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी देना चाहती है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछली बार की तुलना में समाज के उन वर्गों ने मतदाताओं ने मतदान में हिस्सा बढ़ाया है जिनके मतों पर दल लंबे समय से निर्भर थे। इस बढ़ी भागीदारी का मतलब साफ है, नेताओं को अब जवाबदेही भी ढंग से दिखानी होगी।

एनडीए ने न सिर्फ बहुमत पार किया, बल्कि बहुत मामलों में महागठबंधन को पीछे छोड़ा। इस बढ़त के पीछे कई कारक हैं। नीतीश कुमार की महिला मतदाता और अत्यंत पिछड़ा वर्ग फॉर्मूला माना जा रहा है जिनमे एनडीए ने अच्छी पकड़ बनाई है। मुस्लिम बहुल सीटों में एनडीए को पारंपरिक अनुमान से बेहतर नतीजे मिले, खासतौर पर जब बहुत लोग मान रहे थे कि यह हिस्से विरोधी गुट का सहज आधार होंगे। एनडीए की जीत का प्रमुख कारण यह रहा की जनता के बीच जाकर उन्होंने अपने सरकार की उपलब्धियां गिनाई जबकि विपक्ष के पास ऐसा कुछ नहीं था सिवाय नाकामियों के। केंद्र सरकार की तरफ से 10, 000 रुपए की महिलाओं को सौगात भी वोट बैंक का मजबूत आधार बना। दूसरी तरफ विपक्ष मनगढ़ंत नारों पर चलता रहा और जनता ने उस पर भरोसा नहीं जाताया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ 'वोट चोर गद्दी छोड़' जैसे राहुल गांधी के नारों ने उल्टा काम किया। राहुल गाँधी लगातार अपनी राजनीति में बैकफुट पर हैं, लेकिन अपनी रणनीति में कोई बदलाव नहीं ला पा रहे हैं। बिहार चुनाव की सबसे बड़ी बात यह रही है कि नितीश और मोदी के वहां सत्ता में होने की वजह से इसका सीधा लाभ मिला है, जबकि विपक्ष के पास सिर्फ हवाई नारों के अलावा उसके पास दिखाने के लिए कोई जमीन नहीं थी। जबकि बिहार की जनता नितीश और भाजपा सरकार के कार्यों से संतुष्ट थीं जिसका असर चुनाव परिणाम पर साफ दिखा। महागठबंधन इस चुनाव में कुछ आशा लेकर उतरा था, लेकिन उसके प्रदर्शन ने दिखाया कि उसकी रणनीति कामयाब नहीं रहीं और जनता ने एनडीए पर भरोसा जताया। पूर्वानुमानों में उसे करीब 98-118 सीटें मिलने की भविष्यवाणी की गयी थी। लेकिन परिणामस्वरूप वह उम्मीद के मुताबिक स्थिति नहीं बना पाया। विपक्ष में नेतृत्व का स्पष्ट अभाव जनता को यह भरोसा नहीं हुआ कि गठबंधन में कौन वास्तविक सत्ता संभालेगा। जबकि बिहार के युवा, महिलाएं और पिछड़े वर्ग के मतदाताओं ने विकास पर अधिक विश्वास जताया। बिहार के जनादेश ने साफ कर दिया है कि वह धर्म-जात और संप्रदाय की राजनीति से जनता उब चुकी है। अगर सुकून से उसे दो वक्त की रोटी, दो हाथों के लिए काम, बेहतर यातायात और स्वास्थ्य सुविधा मिल रहीं है तो यह निश्चित रूप से एक अच्छी सरकार चुनना चाहती है। बिहार की जनता ने सच्चे मायनों में उसने किसी राजनीतिक दल के लिए नहीं बिहार की उन्नत के लिए यह जनादेश दिया है। बेशक इसमें कोई शक नहीं है कि वहां एनडीए सरकार ने नेतृत्व में नितीश ने काम किया है और इसका फायदा सीधे जनता को मिला है।

मरने के पहले मरने की तमन्ना

वक्रोक्ति

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अपुन हो मन तो नहीं कि वृद्धावस्था में वेंटिलेटर पर सांसें ले रहे हो और जमाने में मरने की हवा फैला दी गई हो। वैसे चतुर सुजान कहते है कि जीते जी मरने की हवा जीवन दान दे दिया करती है। इसी सोच के चलते अपुन जीते जी जमाने की नजरों में मर जाने की तमन्ना रखते हैं। खैर। बीते दिनों यह खबर सुर्खियों मे थी कि एक आदमी ने अपना रसूख जानने के लिए जीते जी मर जाने का नाटक किया। अंतिम यात्रा में जो गए वे तो उनकी नजरों मे चढ़ गए लेकिन जिन्होंने किनारा कर लिया, वे नजरों से उतर गए। आजकल के दौर में जिस प्रकार शुद्धता की कोई गारंटी नहीं, ठीक उसी प्रकार तथाकथित मरने वाला भी मर ही गया हो, इसे लेकर पक्के तौर पर आश्वस्त नहीं हुआ जा सकता।

आजकल के दौर में मीडिया अपने समय से दो कदम आगे चल रहा है। लेकिन सोशल मीडिया तो परंपरागत मीडिया से भी चार कदम आगे की दौड़ लगा रहा है। एक प्रकार से सोशल मीडिया समय का इंतजार नहीं करता। कुछ होने के पहले हल्ला बोलना सोशल मीडिया की आदत में शुमार होता जा रहा है। दरअसल आजकल आदमी को सब्र ही नहीं है, यही कारण है कि कुछ होने से पहले ही कुछ करने की भावनाएं बलवती होती जाती है। अब देखिए न ही मैन स्वस्थ होकर घर को चले गए। जिस घर में उनका घर था वहीं गए। वैसे हमारा आपका अंतिम घर तो एक ही है। अब यह अलग बात है कि हम इस जन्म में अपने पड़ाव को ही अपना घर मानते आए हैं।

वैसे यह भ्रम अधिक से अधिक संबंधित के 100 साल का हो जाने तक हो सकता है, ऐसा माना जाता है। लेकिन अब आदमी यदि 60/65 का भी हो जाएं और तमाम तरह में से किसी खास तरह की बीमारी के चलते वेंटीलेटर के हवाले कर दिया जाएं, तो उसके चाहने वालों को समझ आ जाता है कि बस अब और नहीं। अधिक से अधिक इतने दिन या उतने दिन। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि सूर्योदय के काफी पहले और सूर्यास्त के काफी बाद असमय फोन की घंटी के घनघनाने पर कुछ किनारे बैठे नजदीकी आंखों के सामने तैर जाया करते हैं। इसके मायने यह हुए कि कहीं न कहीं अवचेतन मन में कुछ तो तथाकथित अनहोनी लेकिन होनी का अंदेशा दिमाग में उमड़ घुमड़ रहा होता है।

जब तक किसी के वास्तव में मरने की पक्की खबर नहीं मिले, सुनी सुनाई बात पर विश्वास कर घर बैठे श्रद्धांजलि अर्पित कर देना भी ठीक नहीं। कारण कि ऐसा करने पर अपनी प्रामाणिकता खतरे में पड़ सकती है। अन्यथा यदि शवयात्रा में शामिल होने का 'मूड' बनाकर घर से निकले और बैरंग लिफाफे की तरह घर को लौटना पड़े, तो .... तो क्या दिवंगत के वास्तविक चरित्र चित्रण से वंचित हो जाना पड़ता है। लिखना जरूरी है कि मुक्तिधाम ही वह स्थल है जहां शोकसभा में दिवंगत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का लेखा-जोखा जानने सुनने और समझने का अवसर मिलता है। शोकसभा में दिवंगत के प्रति विभिन्न वक्ताओं द्वारा सकारात्मक भाव व्यक्त किया जाता है। लेकिन नकारात्मक पहलुओं की जानकारी परस्पर खुसर पुसर से मिला करती है।

सोचता हूं कि दुनिया से कूच करने के पूर्व मेरे दुनिया से कूच कर जाने की खबर आम हो जाए, तो मुझे समझ में आ जाएं कि आखिर मेरी जिंदगी का मोल कितना था ? मैं जब सच्ची में दुनिया से कूच कर जाऊं उसके पूर्व ही यह भली भांति जान सकूं कि दुनिया की नजरों में अपुन का अक्स कैसा है ? अगर ऐसा नहीं हो सका तो मुझे क्या पता चलेगा कि इस मायावी संसार में अपुन का वजूद क्या मायने रखता था ? लेकिन, लेकिन अपने ऐसे नसीब कहां कि जीते जी मर जाएं, अपुन तो उन लोगों में है जो जी जी कर रोज दर रोज मरने के अंदेशे से मरे जा रहे हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जनजाति गौरव दिवस विशेष

अमित राव पवार

लेखक स्तंभकार हैं।

बिरसा मुंडा ने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए किया समर्पित

1857 से लेकर 1947 तक का समय इतिहास हमें अवगत करवाता,कितना संघर्ष अपनी मातृभूमि,संस्कृति के लिए हर वर्ग-जाति के लोगों,अनेक वीरों ने भारत भूमि के लिए बलिदान व प्राणों की आहुतियां दी। ब्रिटिश राज में जो संघर्ष हुआ करीब 100 वर्ष का कहा जाता हमे इसी बीच का स्वतंत्रता संघर्ष बताया और पढ़ाया भी यही जाता है। जबकि स्वतंत्रता संग्राम के इतिहासनुसार 1857 में तो मंगल पांडे के द्वारा पहली क्रांति अथवा विद्रोह हुआ इस तात्पर्य से अंग्रेजों या ब्रिटिश शासन इसके पूर्व से ही धीरे-धीरे अपनी जड़े तथा पैर भारत में पसारने लग गए होंगे। कौन और कैसे संघर्ष कर इन गोरे अंग्रेजों से तब मुकाबला कर रहा था जनाकारी के आधार पर उस समय जनजाति समाज के लोग अंगेजो से अपने जल,जंगल,जमीन की रक्षा के लिए इन ब्रिटिश ईसाइयों से मुकाबला कर रहे थे।13 जनवरी 1785 अपनी उम्र के 35वें वर्ष में भागलपुर(बिहार) में अंग्रजों के द्वारा एक पेड़ पर लटकाकर क्रांतिकारी तिलका मांझी को फाँसी दे दी गई। तत्कालीन कलेक्टर ऑगस्टस क्लीवलैड को 1784 में मारा, यह विद्रोह जनजाति समाज के शोषण एवं ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ था,इसे 1857 की क्रांति के काफ़ी पहले माना जाता। जिन्होंने अपने जनजाति समाज के लोगों को साथ लेकर ब्रिटिश हुकूमत से सामना किया। यह सिलसिला यही नहीं थमा,लगातार जनजाति समाज अपने जल,जंगल,जमीन के लिए संघर्ष करते नजर आ रहा इसी कड़ी में एक ऐसा नाम जिसने अंग्रेजो को लोहे के चने चबाने के लिए मजबूर कर दिया अपनी जनजाति समाज को एकत्रित कर धर्म व मातृभूमि के बारे में अवगत कराते हुए स्वाभिमान से जीना सिखाया,मात्र 25 वर्ष की आयु में अपने को इस मातृभूमि के लिए समर्पित कर प्राण दे दिए अपने अद्भुत साहस,शौर्य,पराक्रम,जनसेवा-मदद से वे भगवान बिरसा मुंडा कहलाए।

इस नन्हे से बालक ने अपने स्कूल समय से ही ब्रिटिश अंग्रेजों को समझ लिया तथा यह भी भाप लिया था कि वे हमारे जनजाति समाज के भोले-भाले भाइयों को हमारे मूल धर्म प्रकृति पूजन से अलग कर धर्म परिवर्तन का लालच दे रहे हैं। इसी कारण इस बालक ने अपना विद्यालय छोड़ दिया और अपनी जनजाति बंधुओं को एकत्र कर गोरे अंग्रेजों के सामने संघर्ष करने के लिए तैयार किया। ईश्वर ने किस मिट्टी से बनाया होगा इतिहास में यदि हम देखें तो 23 साल में भगत सिंह फांसी और बिरसा मुंडा 25 वर्ष की आयु में अपनी मातृभूमि के लिए बलिदान अनेक अत्याचारों के बावजूद अपने कर्म से विमुख नहीं हुए।

अंग्रेजों का कहना था कि हम नगर में जीत गए,पर वनों में हार गए। इसका सही और सीधा कारण यही था कि जनजाति समाज के लोग अपने प्रकृति धर्म की पूरी रक्षा करते हुए प्राणों तक निछावर से पीछे नहीं हुए जनजाति समाज में अनेक ऐसे योद्धा हुए जिन्होंने अपनी जल,जंगल,जमीन व धर्म के लिए सब कुछ त्यागते हुए प्राण तक दे दिए। पर यह विडंबना रही की आजादी के बाद इतिहास में इन्हें वह स्थान नहीं मिल पाया जिसके लिए ये असल हकदार थे।15 नवंबर भगवान बिरसा मुंडा जी के जयंती दिन को भारत सरकार ने 2021 में जनजाति गौरव दिवस के रूप में घोषित किया तब से यह दिन जनजाति गौरव दिवस के नाम से जाना जाने लगा। इसका मूल कारण यह की जनजाति समाज के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम व इसके पूर्व के योगदान को समाज के समक्ष लाया जा सके,स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का सम्मान किया जा सके ओर जनजाति समाज जो आज भी अपनी वर्षो पुरानी परंपरा को इस आधुनिक युग मे निभा रहे उन पर गर्व हो।

जनजातीय समाज लोक भाषा, नृत्य,गीत कहावत यह सब अलिखिति है किंतु पीढ़ी दर पीढ़ी यह आगे बढ़ता गया, जनजातीय रीति रिवाज परंपरा, खानपान,पहनावा संस्कृति, रूढ़ी प्रथा परंपरा। इसी तरह जनजाति महापुरुष लोक देवता, कुल देवी-देवता आदि सभी जनजाति गौरव के रूप में पूजे जाते हैं। विभिन्न प्रकार के कार्य जीवन यापन करने वाली वस्तुएं तथा अपने पुश्तैनी कार्य,स्वयं की मेहनत पर विश्वास रखना,समस्त प्रकार के पालतू पशु- जानवर को अपना परिवार का सदस्य मानते व अपना जीवन यापन करते।जल,जंगल,जमीन से जुड़ाव जनजाति समाज की विशेषता तथा स्वतंत्रता संग्राम में विशेष क्रांति करने वाले ही जनजाति समाज है। पाइका, भील, कोल आदि विद्रोह सर्वप्रथम जनजाति समाज ने ही अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी उसके बाद ही यह आग अन्य विद्रोह के रूप में बढ़ती गई। लंबे समय तक साधन व संसाधनों के बिना किसी वस्तु को सुरक्षित रखने का ज्ञान जनजाति समाज के पास ही था,प्राचीन काल से ही जंगलों की जड़ी बूटी का ज्ञान सदियों से जनजाति समाज के पास ही था। जंगलों के जानवरों से प्रेम करना आदिवासियों की ही देन है। सभी प्रकार के जनजातीय मंत्र जो अलिखित है जिसमें सरलता से सांप,बिच्छू आदि जैसे जहर को आसानी से उतारा जाता है। यह मंत्र आज भी जनजाति समाज के पूर्वजों के पास संरक्षित है धीरे-धीरे सभी प्रकार के बीमारियों को ठीक करने का मंत्र ज्ञान जनजाति के पास ही था। धर्म क्या होता है धर्म में किस प्रकार अपना जीवन यापन किया जाता है और समय-समय पर देवी-देवता की पूजा अर्चना करना जनजाति समाज से ही सीखा जाता है। यही सनातन धर्म है और यही जनजाति समाज का गौरव है।

जिस तरह भगवान बिरसा मुंडा जी ने अपना जीवन सर्वस्व राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया उनसे प्रेरणा लेकर जनजातीय समाज समूह में रहना, सामूहिकता जनजाति समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संगठन शक्ति, सामाजिक समरसता,संयुक्त परिवार, सामाजिक सद्भाव आदि गुण जनजाति समाज में विशेष रूप से पाए जाते हैं। जनजाति गौरव दिवस केवल भगवान बिरसा मुंडा जी को ही समर्पित नहीं है। यह दिन उन समस्त जनजाति समाज को समर्पित है जिन्होंने इस मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दिया वे परिवार जिनके कारण आज जनजाति समाज सर उठाकर गर्व कर सके यह दिन हमें बताता है कि इस मातृभूमि के लिए नगरों से पहले वनों से क्रांति आरंभ की गई थी।

रजत पट

डॉ. मनीष जैसल

लेखक सिनेमा के प्राध्यापक और फिल्म समीक्षक हैं।

नेहरू युग का सिनेमा : दृष्टि, संवाद और सांस्कृतिक निर्माण का युग

स्वतंत्रता के बाद जब भारत अपने अस्तित्व और पहचान की नई परिभाषा गढ़ रहा था, तब सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय मानस को आकार देने वाला माध्यम भी बना। इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के केंद्र में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू दिखाई पड़ते हैं। आधुनिक भारत के इस शिल्पकार ने सिनेमा को 'राष्ट्र निर्माण की प्रयोगशाला' की तरह देखा। परंतु जहाँ एक ओर नेहरू का दृष्टिकोण सिनेमा को सामाजिक जागरूकता और प्रगतिशीलता का औजार बना रहा, वहीं दूसरी ओर उसी दौर में फिल्म उद्योग बाजार, नैतिकता और वर्गीय असंतुलन के दबावों से भी जूझता रहा। नेहरू युग के सिनेमा की उसी जटिलता की आलोचनात्मक पड़ताल आज प्रासंगिक है क्योंकि यहाँ यानि सिनेमा में परदे पर आदर्श और यथार्थ, स्वप्न और संघर्ष, दोनों समानांतर चलते हैं।

राजनीति के साथ-साथ नेहरु का गहरा झुकाव कला, साहित्य और सिनेमा की ओर भी था। सिनेमा उनके लिए मात्र मनोरंजन का माध्यम नहीं था, बल्कि वह इसे जनशिक्षा, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रीय एकता का उपकरण मानते थे। जब भारत स्वतंत्रता की ओर अग्रसर था, नेहरू सिनेमा को उस नए भारत की कल्पना का माध्यम बना रहे थे जो विचारों में आधुनिक और संवेदनाओं में मानवीय हो।

नेहरू ने अपने शुरुआती भाषणों और लेखों में बार-बार यह कहा कि सिनेमा जनता तक पहुंचने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। 1948 में उन्होंने सूचना और प्रसारण मंत्रालय के गठन के समय यह स्पष्ट कहा कि भारत में सिनेमा एक विशाल जनशक्ति है, और यदि इसे सही दिशा दी जाए तो यह देश के सांस्कृतिक निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

उनके समय में सिनेमा पर सेंसरशिप और नैतिकता को लेकर कई बहसें हुईं। नेहरू ने इन बहसों में संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। वे यह मानते थे कि कला पर अत्यधिक नियंत्रण उसके रचनात्मक स्वरूप को बाधित करता है, लेकिन साथ ही यह भी स्वीकारते थे कि एक नवगठित राष्ट्र में सामाजिक जिम्मेदारी का भाव सिनेमा में होना चाहिए। इसीलिए उन्होंने फिल्म सेंसर बोर्ड के गठन को समर्थन दिया, ताकि सिनेमा समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मानदंडों के साथ तालमेल रख सके। हालाँकि आज के समय तक यह बहस का बिंदु है कि सिनेमा में सेंसर की जरुरत क्यों है ?

नेहरू का सिनेमा के लोगों से व्यक्तिगत जुड़ाव भी उल्लेखनीय है। वे पृथ्वीराज कपूर, देविका रानी, ख्वाजा अहमद अब्बास, सत्यजीत रे और राज कपूर जैसे कलाकारों और फिल्मकारों के साथ संवाद में रहते थे। राज कपूर की फिल्मों आवारा और श्री 420 में नेहरू ने भारत के उस समाज को देखा जो संघर्षों के बीच उम्मीद और मानवता को बचाए रखने की कोशिश कर रहा था। आवारा की लोकप्रियता सोवियत संघ और एशियाई देशों में जब चरम पर थी, तब नेहरू ने स्वयं कहा था कि 'यह फिल्म भारत की आत्मा की अंतरराष्ट्रीय आवाज़ है।'

सत्यजीत रे की पांथेर पांचाली ने जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का गौरव बढ़ाया, तो नेहरू ने न केवल इस फिल्म की सराहना की बल्कि इसे विदेशों में प्रदर्शित करवाने के लिए सरकार की ओर से समर्थन भी दिया।

नेहरू के काल में भारतीय सिनेमा एक संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। आज़ादी के बाद की फिल्मों में राष्ट्र निर्माण, सामाजिक न्याय, गरीबी, शिक्षा और प्रगतिशीलता के विषय उभरकर आए। दो बीघा ज़मीन, नई दिल्ली, मदर इंडिया और प्यासा जैसी फिल्मों ने उस भारत की तस्वीर दिखाई जो नेहरू के 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' और 'मानवतावादी समाज' के सपने को साकार करने की कोशिश कर रहा था। नेहरू के इस सांस्कृतिक प्रभाव को उस दौर की पटकथाओं और गीतों में भी महसूस किया जा सकता है। नेहरू ने सिनेमा को उस नई राष्ट्रीय चेतना का दर्पण माना जो भारत को परंपरा से आधुनिकता की ओर ले जा सके। वे सिनेमा को विज्ञान, शिक्षा और मानवतावाद के प्रसार का साधन मानते थे। 1947 से 1964 तक का समय भारतीय सिनेमा के लिए पुनर्निर्माण का युग कहा जा सकता है। युद्ध, विभाजन और गरीबी से जूझते समाज में सिनेमा ने लोगों को आशा दी। यह वह दौर था जब नेहरू की 'वैज्ञानिक दृष्टि' और 'समाजवादी' आदर्श फिल्मों की कहानियों में उतरने लगे। नेहरू का मानना था कि भारतीय जनता की चेतना तक सबसे तेज़ पहुँचने का रास्ता सिनेमा से होकर जाता है। उन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा था कि फिल्में 'सबसे जीवंत शिक्षण माध्यम' हैं। इसीलिए 1948 में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की स्थापना के साथ फिल्म डिवीजन का गठन हुआ, जो सरकारी दृष्टि में सिनेमा को एक शिक्षाप्रद औजार के रूप में परिभाषित करता था।

लेकिन यह दृष्टिकोण एक विरोधाभास भी पैदा करता है। जब सिनेमा को शिक्षण माध्यम बना दिया गया, तो उसका कलात्मक स्वतंत्रता का पक्ष कमजोर पड़ने लगा। फिल्मकारों पर यह दबाव बढ़ा कि वे 'राष्ट्रहित' में ही फिल्में बनाएं । यह वही दौर था जब कलात्मक प्रयोगवाद को प्रोत्साहन कम और संदेशपरकता को प्राथमिकता मिली। उदाहरण के लिए, दो बीघा ज़मीन (बिमल रॉय) और मदर इंडिया (मेहबूब खान) जैसी फिल्में नेहरूवादी समाजवाद की भावना से प्रेरित थीं। किसान, श्रमिक और निर्धन वर्ग के संघर्ष को नैतिक आदर्श में रूपांतरित किया गया। परंतु आलोचक यह भी कहते हैं कि इन फिल्मों में गरीबी को अक्सर 'पवित्र' बनाकर दिखाया गया, जिससे वास्तविक वर्गसंघर्ष की जटिलता पर परदा पड़ गया।

नेहरू के सांस्कृतिक दृष्टिकोण में 'प्रगति' का अर्थ पश्चिमी आधुनिकता के समानांतर था। इस कारण सिनेमा में तकनीकी और शहरी विषयों का प्रवेश हुआ। पर यह भी सच है कि ग्रामीण भारत, जहाँ नेहरू की विकास नीतियाँ कम पहुँच पाईं, वहीं सिनेमा में भी धीरे-धीरे 'शहर' नायक बन गया और गाँव 'भावनात्मक पृष्ठभूमि' की तरह परदे पर दिखाई देने लगे ।

इस दौर के गीत और संवाद में 'नए भारत' का सपना था, 'हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के' जैसे गीतों में नेहरू युग की आकांक्षाएँ झलकती हैं। लेकिन इन सपनों के समानांतर सामाजिक असमानता, बेरोजगारी और लिंगभेद जैसे यथार्थ भी मौजूद थे, जिन्हें मुख्यधारा सिनेमा ने सजाकर या नरम बनाकर दिखाया। आलोचकों का मत है कि नेहरू युग का सिनेमा नैतिक और सामाजिक प्रश्नों को भावनात्मक समाधान देता था, तर्कपूर्ण नहीं । यह सिनेमा 'नैतिक नायक' पैदा करता था, न कि 'राजनीतिक नागरिक'। इसलिए उसे समाजशास्त्रीय दृष्टि से संतुलित लेकिन सीमित सिनेमा कहा गया। नेहरू कला की स्वतंत्रता के पक्षधर थे, परंतु उन्होंने यह भी कहा कि कला सामाजिक उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकती। इस कथन ने सिनेमा के लिए नैतिक सीमाएँ तय कर दीं। नतीजतन कई फिल्में उस दौर में 'संवेदनशील' कहकर रोकी गईं या काट-छाँट से गुज़रीं हैं ।

फिर भी यह कहना गलत होगा कि उस समय सिनेमा ने कोई प्रतिरोध नहीं दिखाया। प्यासा (गुरुदत्त) और कागज़ के फूल जैसी फिल्मों ने नेहरूवादी आदर्शों के मोहभंग को बखूबी दर्शाया, जहाँ विकास की चमक के नीचे व्यक्ति की संवेदनहीनता और अकेलापन उभरता है। यह विडंबना ही थी कि जिस दौर में सरकार 'सामाजिक यथार्थवाद' को प्रोत्साहित कर रही थी, उसी समय यथार्थवादी फिल्में आर्थिक रूप से असफल रहीं। जनता ने अधिकतर रोमांटिक या आशावादी कथाओं को अपनाया। इसने दिखाया कि जनता का मानस और सरकारी दृष्टि में एक दूरी थी।

नेहरू के समय भारतीय सिनेमा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बनाई। पांथेर पांचाली को कांस में पुरस्कार मिला, आवारा ने सोवियत संघ में लोकप्रियता पाई। पर आलोचक मानते हैं कि इस 'सांस्कृतिक निर्यात' में भारत को अक्सर 'गरीबी और रहस्य का देश' के रूप में प्रस्तुत किया गया, जो पश्चिमी दर्शकों की कल्पना को भाता था।

नेहरू के समय में अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भारत की भागीदारी बढ़ी। 1952 में पहला इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (IFFI) आयोजित हुआ, जो उनके ही विचारों से प्रेरित था। नेहरू चाहते थे कि भारतीय दर्शक दुनिया के सिनेमा से जुड़ें और भारतीय फिल्मकार वैश्विक दृष्टि को अपनाएं। यह पहल आगे चलकर भारतीय सिनेमा के वैश्वीकरण की दिशा में पहला कदम बनी।

नेहरु युग में सिनेमा का नायक आदर्शवादी, ईमानदार, श्रमिक, सच्चा देशभक्त जैसा था परंतु स्त्री पात्र प्रायः त्याग और मर्यादा की मूर्ति बनकर रह गईं । नेहरू के 'नारी सशक्तिकरण' के राजनीतिक विचार सिनेमा में उतने स्पष्ट रूप से नहीं उतर पाए। संगीत के क्षेत्र में शास्त्रीयता और आधुनिकता का सुंदर मिश्रण सुनाई पड़ता है । नौशाद, शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन जैसे संगीतकारों ने सिनेमा को सांस्कृतिक एकता का स्वर दिया। परंतु यही संगीत उद्योग धीरे-धीरे व्यावसायिक बाजार की ओर झुकने लगा, जो नेहरू के संवेदनशील संस्कृति के आदर्श से अलग दिशा थी।

व्यक्तिगत रूप से नेहरू फिल्मों को देखने और समझने में भी रुचि रखते थे। उनके सचिवों के संस्मरण बताते हैं कि वे समय मिलने पर देशी-विदेशी फिल्में देखते थे और उन पर गंभीर चर्चा करते थे। उन्होंने नेहरू का मानना था कि बच्चों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि संवेदना और ज्ञान देने वाला सिनेमा मिलना चाहिए। उनके समय में बाल फिल्म सोसाइटी जैसी संस्थाओं की अवधारणा पर विचार हुआ और शैक्षिक फिल्मों को बढ़ावा दिया गया। बाद में 1955 में स्थापित चिल्ड्रन फिल्म सोसाइटी, इंडिया (CFSI) उनकी प्रेरणा से ही शुरू हुई, जिसका उद्देश्य था ऐसे बाल सिनेमा का निर्माण जो भारतीय मूल्यों, वैज्ञानिक सोच और सृजनशीलता को पोषित करे।

आज जब हम भारतीय सिनेमा के सौ वर्षों की यात्रा पर नज़र डालते हैं, तो नेहरू का योगदान किसी सूत्रधार की तरह दिखाई देता है, जो राजनीति और संस्कृति, विचार और भावना के बीच सेतु बनाता है। उन्होंने सिनेमा को उस युग की जनचेतना से जोड़ा जब भारत अपने नए अस्तित्व की खोज में था।

जनजातीय दिवस विशेष

प्रो. अस्मिता सिंह

लेखक प्राध्यापक हैं।

जनजातीय संस्कृति में समाया पर्यावरण संरक्षण

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, और इन गाँवों की आत्मा जनजातियों में। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में जब प्रकृति शोषण का शिकार बन रही है, तब भी देश की जनजातीय संस्कृति आज उस आदर्श की मिसाल है, जहाँ मनुष्य और प्रकृति का संबंध उपभोग नहीं, सहअस्तित्व का है।

भारत की जनजातीय संस्कृति प्रकृति के प्रति गहन श्रद्धा, संतुलन और संरक्षण की जीती-जागती परंपरा है। आदिवासी समुदायों के जीवन में जंगल, जल और जमीन मात्र संसाधन नहीं, बल्कि जीवन के मूलाधार हैं। वे प्रकृति को माँ और पर्यावरण को जीवनदाता मानते हैं। यही कारण है कि उनकी संस्कृति, पूजा-पद्धति और लोकाचार में पर्यावरण संरक्षण की गहरी जड़ें समाई हुई हैं।

गोंड जनजाति इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। वे सूर्य, चंद्रमा, वृक्षों और जलस्रोतों की पूजा करते हैं। उनके सबसे प्रमुख देव बूढ़ादेव हैं, जिन्हें साजा वृक्ष के नीचे स्थापित किया जाता है। यह परंपरा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दर्शन से भी जुड़ी है। साजा का वृक्ष अपनी गहरी जड़ों से भूमि को कटाव से बचाता है और उसके चौड़े पत्ते धूप व वर्षा से मिट्टी की रक्षा करते हैं। यही कारण है कि गोंड समाज ने साजा को स्थायित्व और संरक्षण का प्रतीक माना है।

इसी प्रकार, संथाल जनजाति का जाहेर थान प्रकृति पूजा का सर्वोत्तम उदाहरण है। सखुआ वृक्षों के नीचे स्थित यह सामुदायिक पूजा स्थल केवल देव उपासना का नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य और सामाजिक एकता का प्रतीक है। यहाँ वे जाहेर गगो (वन देवी) की पूजा करते हैं जो सृष्टि, हरियाली और जीवन के चक्र की प्रतीक हैं।

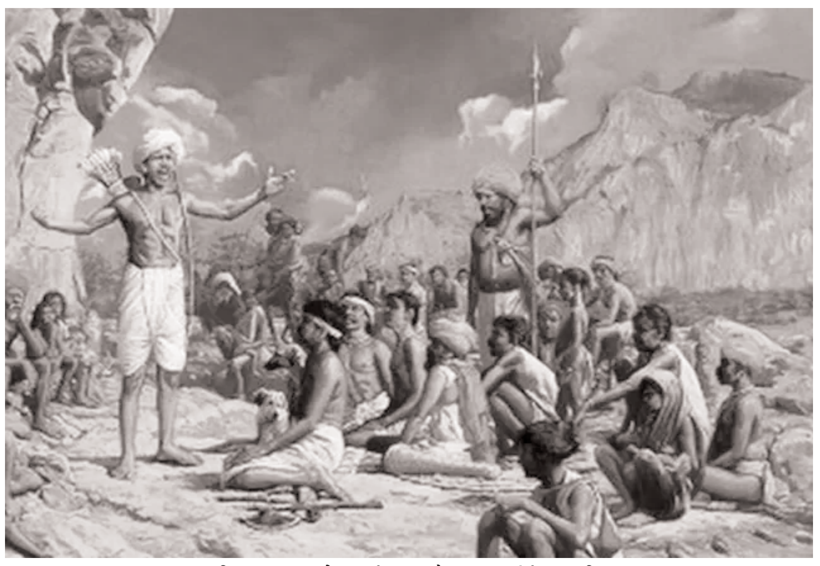

छोटानागपुर क्षेत्र का सरना स्थल भी आदिवासी आस्था का पवित्र केंद्र है। इसे 'पवित्र उपवन' कहा जाता है, जहाँ प्राकृतिक शक्तियों, वृक्षों और ग्राम देवताओं की पूजा की जाती है। फसल कटाई, वर्षा और परिवर्तन के पर्वों पर यहाँ विशेष अनुष्ठान आयोजित होते हैं। सरना स्थल यह दर्शाता है कि जनजातीय समाज में पर्यावरण केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि सामूहिक जीवन का आधार है।

सतपुड़ा की हरित वादियों की गोद में स्थित भील जनजाति-प्रधान बड़वानी ज़िले का मटली गाँव हर वर्ष इंदल उत्सव की आस्था और उल्लास से जीवंत हो उठता है। यह पर्व जनजातीय संस्कृति में जल संरक्षण की गहरी समझ को दर्शाता है। इंदल देव को जल के देवता माना जाता है उनकी पूजा वर्षा, फसल और स्वास्थ्य की मंगलकामना के लिए की जाती है। यह पर्व इस बात का प्रमाण है कि आदिवासी समाज प्रकृति के प्रत्येक तत्व को जीवंत मानता है और उसके साथ कृतज्ञता का संबंध बनाए रखता है।

इन परंपराओं की जड़ में 'जल, जंगल, जमीन' की वही चेतना है जिसे बिरसा मुंडा ने अपने आंदोलन का आधार बनाया था। ऐसे परिप्रेक्ष्य में बिरसा मुंडा का संघर्ष विशिष्ट महत्त्व रखता है। बिरसा ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में जब ब्रिटिश वन-नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई, तो वे केवल सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता की बात नहीं कर रहे थे; वे जल-जंगल-जमीन की आत्मिक रक्षा का आग्रह कर रहे थे। उनकी प्रेरणा यही थी कि जब तक जमीन और वन सुरक्षित नहीं होंगे, तब तक जनजातीय समुदायों की आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक अस्मिता बची नहीं रह सकती। बिरसा का आंदोलन आज भी यह याद दिलाता है कि पर्यावरणीय अधिकार और मानव अधिकार अविभाज्य हैं।

आज जब वैश्विक तापवृद्धि, वनों की कटाई और जलसंकट मानवता के सामने गंभीर चुनौती बन चुके हैं, तब जनजातीय संस्कृति की यह प्रकृति-आधारित जीवन दृष्टि हमें सिखाती है कि पर्यावरण की रक्षा केवल नीतियों से नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों से होती है। भारत की जनजातीय संस्कृति में प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन का मूलाधार है। उनके रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, अर्थव्यवस्था और निर्णय-प्रक्रिया सभी प्रकृति के चक्रों के अनुरूप जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि जनजातीय जीवन पद्धतियाँ पर्यावरण संरक्षण का एक स्वाभाविक और असरदार मॉडल प्रस्तुत करती हैं जिसमें संसाधन का संतुलित उपभोग, जैव-विविधता का सम्मान तथा जल-मिट्टी-वन की पवित्रता बनाए रखने की गहरी समझ समाई है। उनकी परंपराएँ हमें यह संदेश देती हैं कि प्रकृति से अलग होकर नहीं, बल्कि उसके साथ जुड़कर ही मानव सभ्यता का भविष्य सुरक्षित रह सकता है।

सर्दियों में योग

अरुण कुमार

वरिष्ठ पत्रकार, योग जानकार

तंदुरुस्त शरीर और ऊर्जावान मन का मंत्र है योग

जो किशोर मोबाइल व वीडियो गेम तक सीमित होते जा रहे हैं, उनके लिए ये आसन बेहद उपयोगी हैं। यदि विद्यालयों में इन आसनों को सुबह प्रार्थना सभा के बाद 15–20 मिनट कराया जा सकता है, तो यह उनके स्वास्थ्य के लिये बेहद उपयोगी हो सकते हैं। यह उनके जीवन का हिस्सा बन जाए तो वे ताउम्र स्वस्थ रह सकते हैं। इस दौरान छात्रों को आसन करते समय सांस पर ध्यान देने के लिये प्रेरित करना चाहिए। इसके जरिये उनके मन को शांत रखने का सार्थक प्रयास किया जा सकता है।

सर्दियों का मौसम खूब खाने-पीने व सेहत बढ़ाने वाला होता है। लेकिन, ये ठंडक, सुस्ती और कई बार आलस्य लेकर आता है। इस समय शरीर का तापमान कम हो जाता है, रक्त प्रवाह धीमा पड़ता है और पाचन तंत्र भी कमजोर हो सकता है। ऐसे में योग, प्राणायाम और मुद्राओं का अभ्यास शरीर को ऊर्जावान, गरमाहट भरा और स्वस्थ बनाए रखने में बहुत सहायक होता है। हिमालय सिद्ध अक्षर ने बताया कि हम योगासन, प्राणायाम व मुद्राओं से कैसे स्वस्थ रह सकते हैं। शरद ऋतु में जीवन की एकरसता कम करने व ऊर्जावान बनाने में योगासनों की बड़ी भूमिका होती है। इस मौसम में योगासन हमारे शरीर को लचीला, ऊर्जावान और चुस्त बनाते हैं। सर्दियों में कुछ आसन विशेष रूप से लाभकारी होते हैं। सर्दियों में सूर्य नमस्कार सबसे उपयुक्त योग अभ्यास माना जाता है। यह हमारे शरीर के हर भाग को सक्रिय करता है। शरीर में रक्त प्रवाह बढ़ाता है, साथ ही गरमाहट लाता है। स्कूलों में सुबह-सुबह सूर्य नमस्कार का अभ्यास छात्रों को ऊर्जावान बना सकता है। सर्दियों में त्रिकोणासन बेहद लाभकारी होता है। यह हमारे शरीर की जकड़न खत्म करता है। यह आसन हमारे शरीर की मांसपेशियों को फैलाता है। साथ ही पाचन तंत्र को ठीक करता है। आसन ठंड में शरीर की जकड़न कम करता है।

इसी तरह भुजंगासन हमारे शरीर के अगले भाग को ऊर्जावान व लचीला बनाता है। यह आसन रीढ़ की हड्डी को मजबूत करता है। हमारी छाती को फैलाता है और साथ ही फेफड़ों को सक्रिय बनाता है। सर्दियों में सांस से जुड़ी बीमारियों से बचाव के लिए भुजंगासन उपयोगी है। उष्ट्रासन जहां हमारे शरीर के लचीलेपन को बढ़ाता है वहीं ऊर्जा का संचार भी करता है। यह आसन शरीर के आगे के हिस्से को फैलाता है और शरीर में गरमाहट पैदा करता है। साथ ही यह पाचन तंत्र को भी सुधारता है। कालांतर शरीर में व्याप्त आलस्य दूर करता है। सेतुबंध आसन हमारे तन मन को स्वस्थ बनाने में सेतु का कार्य करता है। इसीलिए इसे सेतुबंध आसन नाम दिया गया। जो हमारी कमर को लचीला बनाता है। यह आसन कमर दर्द, थकान और ठंड के कारण होने वाली जकड़न कम करता है।

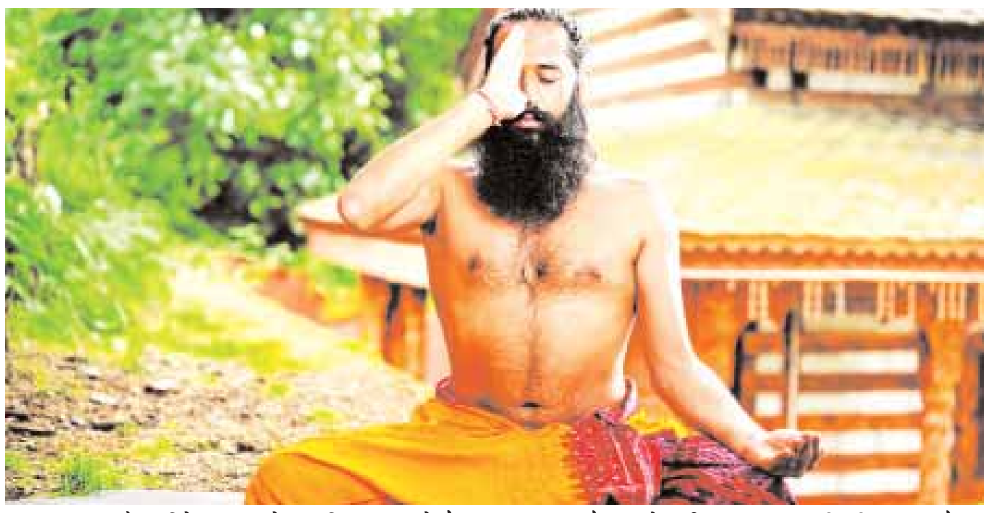

प्राणायाम के जरिये हम सांसों का नियमन करते हैं। इससे शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ जाता है। सर्दियों के मौसम में प्राणायाम हमारे श्वास-प्रश्वास को नियंत्रित करके शरीर में ऊर्जा और गरमाहट का प्रवाह करता है। सर्दियों में निम्नलिखित प्राणायाम बहुत उपयोगी हैं। सर्दियों में शरीर का तापमान नियंत्रित करने में कपालभाति का बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। कपालभाति का अर्थ है 'कपाल को उज्ज्वल करने वाला'। इस प्राणायाम से मस्तिष्क ऊर्जावान और शक्तिशाली बनता है। यह शरीर के रक्त प्रवाह को अच्छा करता है और ठंड के कारण होने वाली सुस्ती को दूर करता है। सुबह खाली पेट 2-3 मिनट इसका अभ्यास लाभदायक है। सही मायनों में अनुमोल-विलोम हमारी सांसों का नियमन करता है। जिसके जरिये हम अपने शरीर के तापमान को भी नियंत्रित कर सकते हैं। दरअसल, यह सबसे संतुलित प्राणायाम है। इससे शरीर का तापमान नियंत्रित रहता है। इसके अलावा श्वसन तंत्र भी मजबूत होता है। अंततः हमारा मन शांत होता है।

योग की भाषा में भस्त्रिका प्राणायाम को 'योगिक ब्लोअर' भी कहते हैं। यह शरीर में जरूरी ऊष्मा पैदा करता है। इसलिए सर्दियों में भस्त्रिका प्राणायाम बेहद लाभकारी है। इससे रक्त में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है और शरीर ऊर्जावान महसूस करता है। विद्यालयों में इन प्राणायामों को सुबह के योग सत्र में या मध्यांतर के बाद करवाया जा सकता है। यह बच्चों में ध्यान, एकाग्रता और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाता है। वास्तव में सर्दियों में मुद्राएं हमारे शरीर की ऊर्जा को नियंत्रित करती हैं। जिससे मानसिक संतुलन बनाए रखने में हमें मदद मिलती है। सर्दियों में कुछ मुद्राएं विशेष लाभदायक हैं जैसे प्राण मुद्रा हमारे शरीर में ऊर्जा को बढ़ाती है। जिससे कालांतर यह शरीर में जीवनी शक्ति भरती है। सर्दियों में यह हाथ-पैरों की ठंडक कम करती है। सूर्य मुद्रा हमारे शरीर की अग्नि (पाचन शक्ति) को बढ़ाती है। सर्दियों के दौरान हमारे शरीर में गरमाहट लाती है। यदि ठंड के दौरान हम थकान या आलस्य महसूस करते हैं तो सूर्य मुद्रा का अभ्यास करना चाहिए। इस मुद्रा का नाम ज्ञान मुद्रा है, यह हमारी ध्यान शक्ति बढ़ाती है, मन को स्थिर करती है। कालांतर हमें मानसिक शांति प्रदान करती है। शीत ऋतु ही नहीं, अन्य मौसम में भी,इन मुद्राओं का अभ्यास 10-15 मिनट तक शांति से बैठकर किया जा सकता है। विशेषकर जब सूर्य की हल्की धूप हो, तो इनका लाभ बढ़ जाता है।

आहार और दिनचर्या का महत्व

योग केवल आसनों तक सीमित नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की एक कला है। सर्दियों में खानपान और दिनचर्या पर ध्यान देना भी उतना ही आवश्यक है। जो हमारे स्वास्थ्य रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सर्दियों में गर्म, ताजा और पौष्टिक भोजन करें, जैसे दलिया, सूप, मूंग दाल, तिल, गुड़, मेवे, और मौसमी सब्जियां। ठंडे पेय, बर्फ या जंक फूड से बचें। सुबह जल्दी उठकर धूप सेंकें। इससे विटामिन मिलेगा और शरीर में गरमाहट बनी रहेगी। पर्याप्त नींद लें और विश्राम करें। दिन में पर्याप्त पानी और हर्बल चाय पिएं ताकि शरीर हाइड्रेटेड रहे। यदि हम दैनिक जीवन में योगासन, प्राणायाम, मुद्राओं का नियमित अभ्यास करें और खान-पान में सावधानी बरतें तो डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं। हम सर्दियों के मौसम को स्वास्थ्यवर्धन का अवसर बना सकते हैं।

गौरव दिवस

कैलाश विजयवर्गीय
(लेखक मप्र सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं)

जनजातीय गौरव दिवस- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अनलिखे अध्यायों को नमन

मध्यप्रदेश के निमाड़ का नाम आते ही टांट्या मामा या टांट्या भील का स्मरण होता है। उन्हें निमाड़ का शेर कहा जाता है वे लगभग पौने 7 फीट ऊंचे, तेजस्वी व्यक्तित्व वाले योद्धा थे। वे अंग्रेजों से लूटा धन और अनाज गरीबों तक पहुंचाते थे। उन्हें 'भारत का रॉबिन हुड' कहा जाता था। उनका आतंक अंग्रेजों की छावनियों तक फैला रहता था, जहां अतिरिक्त सुरक्षा इसलिए रहती थी कि कहीं टांट्या न आ जाए। अंततः अंग्रेजों ने छल से उन्हें पकड़ा, जबलपुर में फांसी दी और उनका शव पातालपानी क्षेत्र में लाकर रख दिया, ताकि आम लोगों को पता चले कि अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने का क्या नतीजा होता है। उनके पकड़े जाने की खबर अंतर्राष्ट्रीय अखबारों में, विशेषकर अमेरिका के न्यूयॉर्क टाइम्स समाचार पत्र में नवंबर 1889, में छापी। आप सोच सकते हैं कि निमाड़/मालवा के छोटे से क्षेत्र में रहने वाले इस जननायक ने भारत में अंग्रेजों की कितनी नाक में दम कर रखी होगी कि उसके बारे में अंतर्राष्ट्रीय मीडिया बात कर रहा था।

15 नवंबर को पूरा देश जनजातीय गौरव दिवस मना रहा है। मध्यप्रदेश, जहां देश की सबसे बड़ी जनजातीय आबादी निवास करती है, इस दिवस को और भी गौरवपूर्ण तरीके से मना रहा है। यह सिर्फ उत्सव मनाने का दिन नहीं, बल्कि उन अनगिनत आदिवासी नायकों के अदम्य साहस, बलिदान और संघर्ष को याद करने का अवसर है, जिन्हें स्वतंत्रता इतिहास में वह स्थान लंबे समय तक नहीं मिला जिसके वे अधिकारी थे।

बिरसा मुंडा- जिनका संघर्ष समय से आगे था

बिरसा मुंडा एक ऐसे जननायक थे, जिन्होंने भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और गांधी जी से भी बहुत पहले अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष का प्रारंभ किया। भारत में जब संगठित स्वतंत्रता आंदोलन की शुरुआत भी नहीं हुई थी, तब झारखंड के दूरस्थ इलाकों और जंगलों में-जहां संचार के साधन नगण्य थे-उन्होंने आदिवासियों को संगठित किया और अंग्रेजी शासन को खुली चुनौती दी।

आदिवासी समाज उन्हें 'धरती आबा' यानी धरती पिता की उपाधि से सम्मानित करता है। उन्होंने अबुआ राज एते जाना, महारानी राज टुंडू जाना का नारा देकर स्वराज की अवधारणा को जंगलों, घाटियों और गांवों तक पहुंचाया।

वर्ष 1900 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में आंदोलन के तेज फैलाव से घबराकर, तत्कालीन जिला मैजिस्ट्रेट ने पुलिस और सेना बुलवाई और डोंबिवाड़ी हिल पर हो रही सभा पर गोलीबारी करवा दी, जिसमें लगभग 400 लोग मारे गए। यह घटना 19 साल बाद हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड के समान थी, परंतु इस घटना को इतिहास में वह स्थान नहीं दिया गया। बिरसा मुंडा को पकड़ने के बाद अंग्रेजों ने निर्णय लिया कि उन्हें बेड़ियों में जकड़कर अदालत ले जाया जाए ताकि आमजन को पता चले कि अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने का क्या नतीजा होता है। परंतु यह दांव उल्टा पड़ गया–बिरसा को देखने के लिए रोड के दोनों ओर हजारों की संख्या में लोग जमा हो गए। उन्हें तीन माह तक सोलिटरी कन्फाइनमेंट में रखा गया और यह भी कहा जाता है कि उन्हें स्लोपॉयज़न दिया गया। अंततः मात्र 25 वर्ष की आयु में वो शहीद हो गए।

आदिवासी वीर: जिन्हें इतिहास ने कम याद किया

अंग्रेजों ने भारत में अपनी जड़ें मजबूत करते ही यहां की प्राकृतिक संपदा, विशेषकर वन संपदा के दोहन की राह पकड़ी। जो आदिवासियों के साथ संघर्ष का कारण बना। 1857 की क्रांति से लगभग 25 साल पहले,शहीद बुधु भगतने छोटा नागपुर क्षेत्र में अंग्रेजों के जल, जमीन और वनों पर कब्जे की नीति के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजाया। इसे लकड़ा विद्रोह के नाम से जाना जाता है। वीर बुधु भगत का विद्रोह इतना तीव्र था कि ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके नाम पर उस समय 1000 रुपये का इनाम रखा था।

सिदू और कान्हू मुर्मूने वर्ष 1855-56 में संथाल विद्रोह / हूल आंदोलन का नेतृत्व किया। जून 1855 में भोगनाडीह में 400 गांवों के 50,000 संथालों की सभा हुई, जिसमें संथाल विद्रोह की शुरुआत हुई। इसका नारा था–करो या मारो अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो। अंग्रेजों के आधुनिक हथियारों का सामना संथालों ने तीर-कमान से किया। कार्ल मार्क्स ने नोट्स ऑन इंडियन हिस्ट्री में संथाल क्रांति को भारत की पहली जनक्रांति कहा।

मध्यप्रदेश के निमाड़ का नाम आते ही टांट्या मामा या टांट्या भील का स्मरण होता है। उन्हें निमाड़ का शेर कहा जाता है वे लगभग पौने 7 फीट ऊंचे, तेजस्वी व्यक्तित्व वाले योद्धा थे। वे अंग्रेजों से लूटा धन और अनाज गरीबों तक पहुंचाते थे। उन्हें 'भारत का रॉबिन हुड' कहा जाता था। उनका आतंक अंग्रेजों की छावनियों तक फैला रहता था, जहां अतिरिक्त सुरक्षा इसलिए रहती थी कि कहीं टांट्या न आ जाए। अंततः अंग्रेजों ने छल से उन्हें पकड़ा, जबलपुर में फांसी दी और उनका शव पातालपानी क्षेत्र में लाकर रख दिया, ताकि आम लोगों को पता चले कि अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह करने का क्या नतीजा होता है। उनके पकड़े जाने की खबर अंतर्राष्ट्रीय अखबारों में, विशेषकर अमेरिका के न्यूयॉर्क टाइम्स समाचार पत्र में नवंबर 1889, में छापी। आप सोच सकते हैं कि निमाड़/मालवा के छोटे से क्षेत्र में रहने वाले इस जननायक ने भारत में अंग्रेजों की कितनी नाक में दम कर रखी होगी कि उसके बारे में अंतर्राष्ट्रीय मीडिया बात कर रहा था।

इसी तरह राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह भारत

के पहले ऐसे रजवाड़े थे जिन्हें वर्ष 1857 की क्रांति को कुचलने की कड़ी में अंग्रेजों द्वारा तोप के मुंह से बांधकर उड़ाया गया। न्याय आयोग, जिसके सामने उन्हें पेश किया गया था, ने उनके सामने जान बचाने के लिए धर्मांतरण सहित कई विकल्प रखे, दोनों ने उन्हें मानने से इनकार कर दिया। इसके बाद उन्हें जबलपुर में ब्लोइंग फ्रॉम ए गन की सजा दी गई।

बड़वानी क्षेत्र के भीमा नायक भीलों के योद्धा थे, जिन्होंने वर्ष 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया था। शहीद भीमा नायक का कार्य क्षेत्र बड़वानी रियासत से महाराष्ट्र के खानदेश तक फैला था। उन्हें आदिवासियों का पहला योद्धा माना जाता है, जिसे अंडमान के 'काला पानी' में फांसी दी गई। वर्ष 1857 के संग्राम के समय अंबापावनी युद्ध में भीमा नायक की महत्वपूर्ण भूमिका थी। कहा जाता है कि जब तात्या टोपे निमाड़ आए थे, तो उनकी भेंट भीमा नायक से हुई थी और भीमा नायक ने उन्हें नर्मदा पार करने में सहयोग दिया था।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों को लोहे के चने चबवाने वाले पचमढ़ी के आदिवासी राजा भभूत सिंह नर्मदांचल के शिवाजी कहलाते थे। जंगलों में रहकर अंग्रेजों को तीन साल तक परेशान करने वाले राजा भभूत सिंह गोरिल्ला युद्ध के साथ-साथ मधुमक्खी के छत्ते से हमला करने में भी माहिर थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तात्या टोपे की मदद भी की थी। मढ़ई और पचमढ़ी के बीच घने जंगलों में आज भी भभूत सिंह के किले का द्वार और लोहारों की भट्टियां मौजूद हैं, जिससे पता चलता है कि वे न केवल किला बनाकर लड़ रहे थे, बल्कि बड़े पैमाने पर हथियार बनाने की क्षमता भी रखते थे।

आदिवासी संघर्ष: स्वतंत्रता की रीढ़

भारतीय इतिहास में आदिवासी समाज का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। चाहे कोल क्रांति हो, उलगुलान हो, संथाल क्रांति हो, महाराणा प्रताप के साथ देने वाले वीर आदिवासी योद्धा हों या सह्याद्री के घने जंगलों में छत्रपति शिवाजी महाराज को ताकत देने वाले आदिवासी भाई-बहन–हर युग में आदिवासी समाज स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के संघर्ष का अग्रदूत रहा है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद इन योगदानों को उचित मान्यता या जगह नहीं मिली, और अगर मिली भी तो वह किताबो की चंद लाइनों तक सीमित रही। कई बार इतिहास के महत्वपूर्ण अध्याय इसलिए दबा दिए गए ताकि एक ही पार्टी और परिवार को स्वतंत्रता संग्राम का श्रेय दिया जा सके।

आधुनिक भारत में सम्मान की पुर्नस्थापना

बीजेपी सरकार के दौर में विकास भी, विरासत भी के सिद्धांत को अपनाते हुए माननीय मोदी जी के नेतृत्व में जहां एक ओर आदिवासी जननायकों को इतिहास में उचित स्थान दिया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न योजनाओं द्वारा विकास की मुख्यधारा से पीछे छूट गए आदिवासी भाई-बहनों को आगे लाने का प्रयास भी किया जा रहा है। नरेंद्र मोदी भारत के पहले ऐसे प्रधानमंत्री थे, जो बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलिहातू (झारखंड) गए। बीजेपी सरकार ने बिरसा मुंडा जयंती को जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया। भारतीय जनता पार्टी ने महामहिम द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति चुनकर जनजातीय समुदाय के वास्तविक गौरव को स्थापित किया है।

मध्यप्रदेश: जननायकों को मिला उचित सम्मान

बीजेपी सरकार ने मध्यप्रदेश में भी जनजातीय नायकों के सम्मान की परंपरा को पुनर्स्थापित किया गया है। छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम शंकर शाह के नाम पर रखा गया। भोपाल के रेलवे स्टेशन का नाम रानी कमलापति के नाम पर किया गया है, राजा भभूत सिंह को सम्मान देने के लिए पचमढ़ी वन्यजीव अभयारण्य का नामकरण उनके नाम पर और पातालपानी रेलवे स्टेशन का नाम टांटिया मामा के नाम करने की घोषणा हो चुकी है। राज्य सरकार आदिवासी जननायकों के सम्मान में सिंग्रामपुर (दमोह) और पचमढ़ी (नर्मदापुरम) में कैबिनेट की बैठक भी कर चुकी है। ये सभी कदम इसलिए हैं ताकि आदिवासियों को उनके योगदान के अनुसार हक मिल सके।

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड जीत पर भाजपा कार्यालय में जश्न मनाया

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की जीत ऐतिहासिक है: जिलाध्यक्ष निलेश भारती

धार। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड बढ़त की घोषणा होते ही धार जिले में भाजपा कार्यकर्ताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई। जिला मुख्यालय स्थित जिला कार्यालय पर भाजपा जिलाध्यक्ष महंत निलेश भारती के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकर्ता एकत्रित हुए और ढोल-नगाड़ों, जयकारों एवं आतिशबाज़ी के साथ जोरदार जश्न मनाया और लड्डू वितरण किए गए। इस दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, भाजपा ग्रामीण जिलाध्यक्ष चंचल पाटीदार विशेष रूप से मौजूद रहे। जिलाध्यक्ष निलेश भारती ने कहा की बिहार की जनता ने एक बार फिर एनडीए पर भरोसा जताकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अमित शाह और नीतीश कुमार के नेतृत्व पर अपनी मुहर लगाई है। यह सचमुच ऐतिहासिक जीत है। उन्होंने कहा कि यह नतीजे बताते हैं कि देश की जनता विकास, राष्ट्रवाद और आस्था–तीनों मुद्दों को महत्व देती है और ऐसे लोगों को पसंद नहीं करती जो धार्मिक भावनाओं पर चोट करते हों। जश्न के दौरान भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम और जयराज देवड़ा भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ,भाजपा नेता अनिल जैन बाबा, पूनमचंद फकीरा ,मनीष प्रधान, कुसुम सोलंकी ,अंकित भावसार जसप्रीत डंग अमित शर्मा बादल मालवीय दीपक बिड़कर राजेश हारोड़ राजेश डाबी जीवन यादव ,महेश बोडाने ,शांतिलाल शर्मा, सोनिया राठौर ,गौरव जाट सन्नी होड़ा महेश कदम कमलेश बिजवा समेत भाजपा के अनेक नगर पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

72वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह का शुभारंभ

धार। जिला सहकारी संघ धार एवं जिला सहकारी केंद्रीय बैंक धार के संयुक्त तत्वाधान में 72, वे अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सहकारिता विभाग के सहायक आयुक्त सुश्री प्रत्याशा रघुवंशी विशेष अतिथि के. एल. राठौर पूर्व प्राचार्य, सहकारी प्रशिक्षण केंद्र इंदौर, प्रशांत ठाकरे प्रदेश संपर्क प्रमुख सहकार भारती धार, मोतीलाल पाटीदार महामंत्री सहकार भारतीय जिला धार रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ किया गया। प्रारंभ में मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया। अतिथियों का स्वागत जिला सहकारी संघ के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री शुभेंद सिंह पवार एवं विभिन्न सहकारी संस्थाओं से आए हुए अतिथियों द्वारा किया गया ।जिला सहकारी संघ के सीईओ शुभेंद सिंह पवार द्वारा सहकारी सप्ताह का परिचय देते हुए जिला सहकारी संघ द्वारा किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम की चर्चा की। के एल,राठौर पूर्व प्राचार्य सहकारी प्रशिक्षण केंद्र इंदौर द्वारा सरकारी सप्ताह में आज के विषय आत्मनिर्भर भारत के माध्यम के रूप में सहकारिता एवं परिचालन दक्षता जवाबदेही और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के विषय पर अपने विचार रखे। सहकार भारती के प्रदेश संपर्क प्रमुख प्रशांत ठाकरे द्वारा शहरी साख सहकारिता की योजनाओं पर चर्चा करते हुए सहकारी बैंकिंग के विषय में अपने विचार रखें। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सहकारिता विभाग की सहायक आयुक्त प्रत्याशा रघुवंशी द्वारा पैक्स के कंप्यूटराइजेशन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जिले के अंतर्गत 34 से अधिक प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्थाओं का कंप्यूटरीकरण किया जा चुका है एवं यह कार्य प्रगति पर है जो जल्द ही पूरा हो जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही नाबार्ड की सहायक महाप्रबंधक सुश्री सौदामिनी जी द्वारा नाबार्ड की योजनाओं पर चर्चा करते हुए पैक्स की विषयवस्तु की स्थिति पर अपने विचार रखें।

शहीद चौपाल पर बाल दिवस, जनजाति गौरव दिवस मनाया

बैतूल। सरदार गंजनसिंह चौपाल पर जनजाति गौरव पखवाड़ा पर बाल दिवस के साथ जनजाति गौरव दिवस भी मनाया गया। शुक्रवार 14 नवम्बर को सरदार गंजनसिंह चौपाल पतौवापुरा में हरदा, होशंगाबाद (नर्मदापुरम) व बैतूल के साथ ही छिंदवाड़ा जिले से भी सहभागी शामिल हुए। जनजाति गौरव दिवस के मौके पर साथियों ने ढोल बाजा के साथ तहसील मैदान खेड़ापति प्रांगण से दो-दो की कतार में रैली के रूप में कतारबद्ध होकर सरदार गंजनसिंह चौपाल तक आकर बिरसा मुंडा व स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर दीप प्रज्ज्वलित कर तिलक किया। इस मौके पर किसान आदिवासी संगठन के फागराम ने क्रांतिकारियों नमन करते हुए अपने शब्दों में कहा कि आज की परिस्थितियों में हमें एक होकर हक अधिकार के लिए लडने् की आवश्यकता है। इसलिए हमें राजनीतिक ताकत बनाने की भी आवश्यकता है। किसान आदिवासी संगठन केसला नर्मदापुरम से आए कपिल खण्डेलवार ने बालदिवस एवं जनजाति गौरव दिवस पर प्रकाश डाला। कहा कि देश में सरकारें गरीबों व किसानों, मजदूरों के खिलाफ कानून बना रही है। इसके बाद काशी उत्तरप्रदेश के चंचल मुखर्जी ने पूंजीपतियों एवं कंपनियों ने उड़ीसा सहित देश के विभिन्न हिस्सों में किस तरह 23000 हजार करोड़ रूपया का राजस्व नुकसान किया है एवं कर रही है। बैतूल के स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी अन्तूसिंह मर्सकोले द्वारा आदिवासियों पर हो रहे। अत्याचार व आज आदिवासी संस्कृति संकट में है। आज की शिक्षा व्यवस्था जो व्यवसाय में बदल रही है। इसके पीछे बड़ा षडयंत्र है। पूजा पद्धति, संस्कृति व हक अधिकार के लिए संकल्प दिलाया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रमिक आदिवासी संगठन के राजेन्द्र गढ़वाल ने किया। इस मौके पर सार्वजनिक विकास मंच शाहपुर, किसान आदिवासी संगठन, श्रमिक आदिवासी संगठन आदि शामिल हुए। आखिरी में जिले में चल रहे दिवाली उत्सव एवं संस्कृति मनाकर सभी को तिलक करके पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के अंत में सार्वजनिक विकास मंच शाहपुर संयोजक कापसे गुरूजी द्वारा सबका आभार व्यक्त किया गया।

जनजातीय गौरव दिवस समारोह का आयोजन आज, प्रभारी मंत्री के मुख्य आतिथ्य में होगा जिलास्तरीय कार्यक्रम, विकास कार्यों का होगा लोकार्पण और भूमिपूजन

बैतूल। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती के अवसर पर जनजातीय गौरव दिवस का आयोजन 15 नवंबर को लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री तथा जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल के मुख्य आतिथ्य में दोपहर 1.00 बजे से पुलिस ग्राउंड में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विकास के लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया जाएगा। साथ ही जनजातीय संस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के साथ राज्य स्तरीय कार्यक्रम का सजीव प्रसारण भी किया जाएगा। प्रभारी कलेक्टर अक्षत जैन ने शुक्रवार को कार्यक्रम स्थल पुलिस ग्राउंड बैतूल पहुंचकर तैयारियों का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा अनुसार अतिथियों का

आगमन, प्रदर्शनी का अवलोकन, लोकार्पण और भूमिपूजन, मंच पर आगमन, स्वागत सम्मान, हितग्राहियों को हितलाभ वितरण, राज्य स्तरीय कार्यक्रम के प्रसारण के साथ ही बैठक व्यवस्था, पेयजल इत्यादि व्यवस्थाओं का जायजा लिया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट, एसडीएम अभिजीत सिंह, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विवेक पांडे, प्रबन्धक डीआईसी धीरज मंडलेकर, जिला सूचना एवं विज्ञान अधिकारी रचना श्रीवास्तव सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहें।

सरस्वती विद्या मंदिर में मनाई गई बिरसा मुंडा की जयंती

बैतूल। सरस्वती विद्या मंदिर गाड़ाघाट में बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित पूर्व आचार्य हेमराज कापसे ने बिरसा मुंडा के शौर्य गाथा और संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे एक सफल सामाजिक कार्यकर्ता और संगठन करता थे। उन्होंने जिस तरह आदिवासी समाज को एकजुट करने, उनके अधिकारों की रक्षा करने और धार्मिक सुधारों के लिए कार्य किया उसी तरह आज की पीढ़ी को भी बिरसा मुंडा के संघर्षपूर्ण जीवन से प्रेरणा लेकर उनके कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए। कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य,आचार्य और पूर्व छात्र ऋषि पेंड्रा, भावेश मालवीय उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन विद्यालय के भैया बहनों के शानदार गोंडी नृत्य की प्रस्तुति से हुआ। बिरसा मुंडा की भूमिका में विद्यालय के राघव और विक्रम रहे।

बिहार में एनडीए की प्रचंड जीत का जिला भाजपा ने मनाया उत्सव

बैतूल। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को बिहार में मिले अभूतपूर्व जनादेश पर जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में उत्सव मनाया गया। इस दौरान केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास

उइके ने कहा कि यह एनडीए की नीतियों की जीत है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार के कुशल नेतृत्व और जनहितैषी योजनाओं के चलते जनता ने एक बार फिर जनादेश दिया है। देश में जितने भी राज्यो में भाजपा की सरकारे व समर्थन की सरकार रही है। वहा जनता बार बार एनडीए को चुन रही है। भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने कहा कि बिहार के ऐतिहासिक जनादेश से स्पष्ट होता है कि विकास का कोई पर्याय नही होता बिहार की जनता ने मोदी जी की बात पर और नितीश कुमार जी के नेतृत्व पर भरोसा जताया है, जंगलराज से त्रस्त बिहार की जनता ने सुशासन पर ही मोहर लगाई। कांग्रेस का काम पूरे चुनाव में सिर्फ झूठ बोलना रहा जनता ने इस नाकारा, झूठी कांग्रेस को उसकी असली जगह दिखाई है। बिहार के ऐतिहासिक चुनाव परिणाम से गदगद भाजपा कार्यकर्ताओ व पदाधिकारियों ने जिला मुख्यालय विजय भवन के समक्ष जमकर आतिशबाजी करी एवं एक दूसरे को मिठाई खिलाकर जीत की शुभकामनाएं दी।

शहर में बना रहे सांप्रदायिक सौहार्द्र, शांति बिगाड़ने वालों पर प्रशासन करें कार्यवाही

जामा मस्जिद कमेटी आमला ने सौंपा ज्ञापन

आमला। शहर के सांप्रदायिक सौहार्द और सामाजिक समरसता को बनाए रखने की अपील करते हुए जामा मस्जिद कमेटी आमला की ओर से सदर जाहिद पटेल ने अनुविभागीय अधिकारी को एक ज्ञापन सौंपा हैं। ज्ञापन में हाल ही में हुई दो संवेदनशील घटनाओं पर गंभीर चिंता व्यक्त की गई और दोषियों पर तुरंत व कठोर कार्रवाई की मांग रखी गई। समिति ने बताया कि 1 नवंबर 2025 की शाम पीर मजिद चौक पर देवी विसर्जन जुलूस के दौरान अचानक कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा पथराव किया गया, जिससे शहर में तनाव जैसी स्थिति बन सकती थी। जामा मस्जिद समिति ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि आमला हमेशा आपसी भाईचारे और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक रहा है। ऐसे माहौल को खराब करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई होना आवश्यक है। समिति ने कहा कि इस तरह की घटनाओं में शामिल किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाना चाहिए। समिति ने प्रशासन से आग्रह किया कि शहर की सौहार्दपूर्ण छवि को कायम रखने के लिए असामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखी जाए और कानून व्यवस्था मजबूत की जाए। इस ज्ञापन की प्रतिलिपि तहसीलदार को भी दी गई। जामा मस्जिद समिति ने कहा कि आमला शहर हमेशा भाईचारे, एकता और सभ्यता का उदाहरण रहा है और इसे बनाए रखने में सभी नागरिकों को अपना योगदान देना चाहिए। ज्ञापन सौपन वालों में जामा मस्जिद के सदर जाहिद पटेल, शेख आबिद, मोहम्मद आसीफ लंघा, रशीद खान, शेख जुनेद, अतीक खान, सलमान खान आदि शामिल थे।

दिगंबर जैन धर्मशाला नव निर्माण हेतु भूमि पूजन

उपाध्याय गुरुदेव श्री विभंजन सागरजी के सानिध्य में 16 नवंबर को

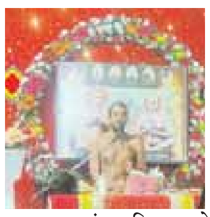

धार। दिगंबर जैन समाज धार में चातुर्मास कर रहे मुनिश्री विभंजन सागर जी ससंघ के पावन सानिध्य में रघुनाथपुरा स्थित क़रीब 150 वर्ष पुरानी धर्मशाला का नव निर्माण हेतु भूमि पूजन 16 नवंबर रविवार को समाजश्रेष्ठी दानवीर भरत कुसुम मोदी परिवार इंदौर द्वारा सम्पन्न होगा ।इस कार्य हेतु भरत कुसुम मोदी परिवार द्वारा विशेष सहयोग समाज को प्रदान किया जाएगा। समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल ने बताया कि पूज्य मुनिश्री के चातुर्मास प्रवास के दोरान अनेक धार्मिक महापूजन का आयोजन किया गया। जिससे समाज में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई व समाज सदस्यों ने धर्म लाभ लिया। इसी कड़ी में दिगंबर जैन युवा संगठन द्वारा 24 घंटे का शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिरजी में अखंड भक्तामर का पाठ व विधान का आयोजन किया गया। पिछले तीन दिनों से शहर के बाहर निवासरत जैन समाज के सदस्य परिवारों को भी पूज्य मुनिश्री का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। इस दौरान पूज्य मुनिश्री की आहारचर्या स्वाध्याय एवं सायंकालीन जिज्ञासा समाधान भी कालोनी के सदस्यों परिवारों के यहाँ सम्पन्न हुई । 15 नवम्बर को पूज्य मुनिश्री के द्वारा समाज के बच्चों का उपनयन संस्कार एवं दाम्पत्य संस्कार का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में बच्चों दम्पत्ति सदस्यों में धार्मिक संस्कार रोपित किये जाएँगे । जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

एक्ट ईव फाउंडेशन का आयोजन आज नि :शक्त बच्चों की प्रस्तुति–सम्मान और सदाबहार नगमों से सजेगी शाम

देवास । शहर की सामाजिक संस्था एक्ट ईव एजुकेशन एंड सोशल वेलफेयर सोसायटी अपनी स्थापना के दस बरस पूरे होने पर शनिवार 15 नवंबर को मल्हार स्मृति मन्दिर सभागार में एक अभिनव आयोजन करने जा रही है जिसमें शाम पाँच बजे से सात बजे तक शहर के निःशक्त और मानसिक रूप से अस्वस्थ बच्चे अपनी प्रस्तुति देंगें । इसके बाद इन संस्थाओं में इनकी सतत देखरेख करने वालों को सम्मानित किया जायेगा। कार्यक्रम में दो निःशक्त जनों को संस्था द्वारा व्हीलचेयर एक को ट्राईसिकल तथा दो श्रवणबाधित व्यक्तियों को हियरिंग एड भी प्रदान किये जायेंगे । संस्था अध्यक्ष मोहन वर्मा तथा सचिव किशोर असनानी ने बताया कि कार्यक्रम के दूसरे हिस्से में शाम सात से नौ बजे तक किशोर संस्कृति मंच इंदौर के गायक गायिकाए सदाबहार गीतों की प्रस्तुति देंगें । उल्लेखनीय है कि संस्था द्वारा विगत दस वर्षों में समाजसेवियों,उद्योगों,बैंकों के माध्यम से जिले के 65 से अधिक सरकारी स्कूलों के बच्चों को 2500 से अधिक फ़र्नीचर उपलब्ध करवाया गया है जिसका लाभ 7500 से अधिक बच्चे ले पा रहे है । इसके अलावा विभिन्न स्कूलों में आरओ,कम्प्यूटर,बच्चों को स्वेटर,स्कूल बैग और अन्य आवश्यक सामग्री भी मुहैया करवाई गई है । संस्था के पदाधिकारियों ने सभी से कार्यक्रम में सहभागिता का अनुरोध किया है ।

कब्रिस्तान की भूमि पर दबंग लोग कर रहे कब्जा

जामा मस्जिद कमेटी ने प्रशासन से की दखल की मांग

आमला। ग्राम रतेड़ा कला स्थित मुस्लिम कब्रिस्तान की भूमि पर अवैध कब्जे की शिकायत को लेकर मस्जिद कमेटी आमला के अध्यक्ष जाहिद पटेल ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व आमला शैलेन्द्र बडोनिया को ज्ञापन सौंपा। जाहिद पटेल ने बताया कि रतेड़ा कला में खसरा नंबर 256, 257 और 364 कुल रकबा लगभग 1 एकड़ से अधिक भूमि पर वर्षों से मुस्लिम समाज अपने मृतकों को दफन करता आ रहा है। यह भूमि आधिकारिक रूप से कब्रिस्तान के रूप में दर्ज है। आवेदन में आरोप लगाया गया है कि कब्रिस्तान के पास रहने वाले गीता खातरकर और आकाश खातरकर द्वारा कब्रिस्तान की भूमि में अवैध रूप से दखल दिया जा रहा है। मेढ़ को सरकाने, जमीन पर कब्जा बढ़ाने और रास्ता बनाने जैसे प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे कब्रिस्तान की सीमाएं प्रभावित हो रही हैं और भविष्य में विवाद की स्थिति बन सकती है। मस्जिद कमेटी ने प्रशासन से माँग की है कि कब्रिस्तान की भूमि का तत्काल सीमांकन कराया जाए और अवैध कब्जे को हटाते हुए जमीन को सुरक्षित किया जाए, ताकि आने वाले समय में किसी तरह का विवाद उत्पन्न न हो। ज्ञापन देने वालों में जामा मस्जिद सदर जाहिद पटेल, प्रेस क्लब ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट अध्यक्ष मोहम्मद आसीफ लंघा, अतीक खान, शेख जुनेद, शेख आबिद,शेरू खान, नसीर खान, मो. अजहर, सलीम खान और शेख सुल्तान सहित कई लोग शामिल थे।

ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर गोपाल मंदिर का किया औचक निरीक्षण

मुख्यमंत्री ने इंदौर के ऐतिहासिक दो मंजिला गोपाल मंदिर में दर्शन कर पूजा की

सीएम ने जीर्णोद्धार और विकास कार्यों का लिया जायजा

भोपाल/इंदौर (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को इंदौर के ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहर गोपाल मंदिर का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने मंदिर में पूजा-अर्चना भी की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव विकास कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि मंदिर परिसर में नवनिर्मित सभागृह को 'गीता भवन' के रूप में विकसित किया गया है। गीता जयंती के अवसर पर इसे एक दिसंबर को जनता को समर्पित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह सभागृह 500 सीट का रहेगा। इसमें सभी अत्याधुनिक सुविधाएं रहेंगी। यह सभागृह धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का केन्द्र बनेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गोपाल मंदिर में बच्चों को स्नेहपूर्वक दुलार किया और आसपास के दुकानदारों से भी चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूरे मंदिर परिसर में चल रहे विकास कार्यों और जीर्णोद्धार के कार्यों को देखा। उन्होंने निर्देश दिए कि मंदिर को अपने प्राचीन तथा गौरवशाली स्वरूप में पुर्नस्थापित किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश शासन द्वारा निर्णय लिया गया है कि गीता जयंती पर पूरे मध्यप्रदेश में विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। हर जिले में गीता भवन विकसित किए जाएंगे ताकि धार्मिक, सांस्कृतिक और अध्यात्मिक गतिविधियों को बढ़ावा मिल सके।

निरीक्षण के दौरान जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक श्रीमती मालिनी लक्ष्मण सिंह गौड़, पुलिस कमिश्नर श्री संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर श्री शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री दिलीप कुमार यादव, स्मार्ट सिटी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री अर्थ जैन एवं श्री सुमित मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधि शामिल थे।

सीएम का लाड़ली बहनों और स्वच्छता दीदियों ने जताया आभार

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का शुक्रवार को इंदौर में लाड़ली बहनों और स्वच्छता दीदियों ने पुष्प-गुच्छ और पुष्प-मालाओं से स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का लाड़ली बहनों ने उन्हें हर माह 1500 रुपये दिए जाने और स्वच्छता दीदियों के लिए नगर निगम के माध्यम से अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए आभार जताया। इस अवसर पर जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट, विधायक श्रीमती मालिनी लक्ष्मण सिंह गौड़, पुलिस कमिश्नर श्री संतोष कुमार सिंह, कलेक्टर श्री शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री दिलीप कुमार यादव, अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर श्री अमित सिंह, श्री सुमित मिश्रा, अपर आयुक्त नगर निगम श्री रोहित सिसोनिया एवं श्री सुमित मिश्रा सहित अन्य अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

इंदौर के प्रसिद्ध पोहे का लिया आनंद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इंदौर के राजवाड़ा के एक रेस्टोरेंट में मौजूद लोगों से चर्चा की। उन्होंने इंदौर के प्रसिद्ध पोहे का आनंद भी लिया।

बिहार चुनाव में एनडीए की जीत, एमपी में जश्न

इंदौर में सीएम ने भाजपा कार्यकर्ताओं को खिलाए लड्डू, प्रदेशभर में आतिशबाजी

भोपाल (नप्र)। बिहार चुनाव के नतीजे साफ होने लगे हैं। 243 सीटों के रुझान में एनडीए रिकॉर्ड जीत की ओर है। एनडीए 204 सीटों पर आगे है। जबकि महागठबंधन 32 पर बढ़त बनाए हुए थी। एनडीए की स्पष्ट बहुमत वाली सरकार बनाती दिखाई दी।

इंदौर बीजेपी कार्यालय में जश्न में शामिल हुए सीएम- बिहार में एनडीए गठबंधन की जीत के बाद इंदौर बीजेपी कार्यालय में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव पहुंचे। सीएम ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ जीत का जश्न मनाया। कार्यकर्ताओं को मिठाई खिलाकर बधाइयां दी। नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा के नेतृत्व में बीजेपी कार्यालय पर मुख्यमंत्री यादव का स्वागत किया गया।

इसके साथ ही मध्यप्रदेश भाजपा में जश्न का माहौल बन गया है। प्रदेश भाजपा कार्यालय में बड़ी संख्या में नेता और कार्यकर्ता पहुंचकर जीत का जश्न मना रहे हैं। इंदौर में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कार्यकर्ताओं को लड्डू खिलाकर खुशी जाहिर की। प्रदेशभर में आतिशबाजी हुई और मिठाइयां बांटी जा रही हैं।

सीएम के प्रचार वाली 21 सीटों पर एनडीए को बढ़त- बिहार चुनाव प्रचार में सीएम मोहन यादव ने एमपी से जाकर 25 विधानसभा सीटों पर प्रचार किया था। रुझानों के अनुसार इन सीटों पर उनका 84 प्रतिशत स्ट्राइक रेट रहा। 25 में से 21 सीटों पर एनडीए उम्मीदवार आगे हैं। हालांकि, अंतिम और आधिकारिक परिणाम थोड़ी देर में जारी होंगे।

मंत्री संपतिया उइके बोली-पूर्ण बहुमत की सरकार- बिहार चुनाव में एनडीए को मिली ऐतिहासिक सफलता पर पीएचई मंत्री संपतिया उईके ने कहा कि एनडीए के सभी प्रत्याशियों को जिताने के लिए कार्यकर्ताओं ने अथक प्रयास किए हैं, जो निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं।

एनडीए लगभग 200 सीटों के करीब पहुंच रहा है। इससे स्पष्ट है कि एनडीए की सरकार पूर्ण बहुमत के साथ बनेगी। सरकार जनता की अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।

रीवा में डिप्टी सीएम ने कार्यकर्ताओं के साथ मनाया जश्न- रीवा में डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने भाजपा कार्यालय पहुंचकर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ जीत का जश्न मनाया। इस दौरान एक-दूसरे को मिठाइयां बांटी गई और आतिशबाजी की गई।

मप्र भाजपा अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने दी बधाई

मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए को बिहार में भारी बहुमत मिला है। मध्य प्रदेश के सभी भाजपा कार्यकर्ताओं की ओर से प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा जी को बधाई देता हूँ। साथ ही बिहार की जनता का आभार व्यक्त करता हूँ।

वीडी शर्मा बोले–बिहार में एनडीए की आंधी

भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि बिहार में एनडीए की मात्र जीत नहीं, बिहार की जनता की जीत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार में एनडीए की आंधी बही है। बिहार की जनता ने विकास को वोट दिया है। बिहार की जनता ने विकास का ट्रेंड तय किया है।

नरोत्तम बोले- मोदी संग नीतीश, आरजेडी फिनिश

पूर्व मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि बिहार में जो वोट चोरी की यात्रा निकाल रहे थे, आज बिहार की जनता ने उन्हें वोट चोरी का जवाब दे दिया। मैंने पहले ही कहा था कि राहुल गांधी दो अंकों तक नहीं पहुंच पाएंगे। उन्हें 10 सीटें भी नहीं मिल रही हैं।

पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह बोले- जो शक था वो ही हुआ

जो मेरा शक था वही हुआ। 62 लाख वोट कटे 20 लाख वोट जुड़े उसमें से 5 लाख वोट बिना एसआईआर फॉर्म भरे बड़ा दिए गए। अधिकांश वोट गरीबों के दलितों के अल्प संख्यक वर्ग के कटे। उस पर ईवीएम पर तो शंका बनी हुई है। हमें अपने संगठन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आज का चुनाव मतदान केंद्र पर सघन जनसंपर्क का है ना कि रैली व जनसभा का। विजयी प्रत्याशियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भोपाल में 78वां आलमी तबलीगी इज्तिमा

मलेशिया, सऊदी अरब, ईरान समेत 19 देशों से लोग पहुंचे, दिल्ली धमाके के बाद सुरक्षा कड़ी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के ईटखेड़ी में शुक्रवार को फजर की नमाज के बाद 78वां आलमी तबलीगी इज्तिमा शुरू हो गया। यह चार दिन (14 से 17 नवंबर) तक चलने वाला बड़ा धार्मिक कार्यक्रम है। इसमें लगभग 12 लाख लोगों के शामिल होने की संभावना है। इंडोनेशिया, केन्या, मलेशिया, सऊदी अरब, ईरान, मोरक्को सहित 19 देशों से जायरीन (श्रद्धालु) पहुंच चुके हैं और अभी भी लोगों का आना जारी है।

इस बार इज्तिमा का प्रबंधन पहले से ज्यादा बड़ा और व्यवस्थित है। मुख्य पंडाल 120 एकड़ में, पार्किंग 350 एकड़ में बनाई गई है और पूरा आयोजन क्षेत्र करीब 600 एकड़ में फैला है। दिल्ली में हुए विस्फोट के बाद सुरक्षा और भी कड़ी कर दी गई है। रेलवे स्टेशन से लेकर इज्तिमा-स्थल तक हर जगह सख्त सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

आईजी अभय सिंह ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर का आयोजन है, इसलिए सुरक्षा, ट्रैफिक और इमरजेंसी सेवाओं के लिए सभी एजेंसियां मिलकर काम कर रही हैं।

रोजाना होंगी चार तकरीरें- इज्तिमा में हर दिन चार तकरीरें होंगी- फज्र, जोहर, असर और मगरिब के बाद। बता दें वक्ताओं के नाम पहले से घोषित नहीं किए जाते। तकरीरों में दीनी संदेश, सामाजिक सुधार और उम्मत की बेहतरी से जुड़ी बातें रखी जाती हैं। कमेटी सदस्य डॉ. उमर हफीज़ ने बताया कि हर तकरीर तय वक्त पर होगी और जायरीन इनसे सीधे जुड़ सकेंगे।

दिल्ली धमाके के बाद सख्त सुरक्षा- दिल्ली धमाके के बाद भोपाल रेलवे स्टेशन और आसपास के इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था की गई है। जीआरपी ने पहली बार रेंडम बीएड एण्ड डीएस (बम डिस्टेशन एण्ड डिटेक्शंस एण्ड डिसपोल स्कावाड चेकिंग शुरू की है। प्लेटफॉर्म, पार्किंग एरिया और मालखानों में रोजाना दो बार तलाशी ली जा रही है। बुधवार को टीम ने 250 से 300 वाहनों की जांच की।

स्टेशन के प्रवेश और निकास द्वारों पर (हैंड हेल्ड मेटल डिटेक्टर) और (डोर फ्रेम मेटल डिटेक्टर) लगाए गए हैं। जीआरपी एसपी राहुल लोढ़ा ने बताया, इज्तिमा के दौरान रोजाना दो बार अलग-अलग जगहों पर रेंडम चेकिंग होगी, ताकि किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर तुरंत कार्रवाई की जा सके।

भोपाल की 10 लेन सड़क पर सॉलिड वेस्ट का इस्तेमाल

एनएचएआई ने निगम से मांगा वेस्ट, 9000 पेड़ों की कटाई की वजह से अभी रुका काम

भोपाल (नप्र)। भोपाल के पहले 10 लेन अयोध्या बायपास प्रोजेक्ट में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) करीब 10 लाख टन सूटेबल सॉलिड वेस्ट का इस्तेमाल करेगा। इसके लिए भोपाल नगर निगम से डिमांड भी की गई है। हालांकि, प्रोजेक्ट 9000 पेड़ों की कटाई की वजह से रुका हुआ है। एनएचएआई अफसरों का कहना है कि जब तक पेड़ काटने की अनुमति नहीं मिलती, तब तक प्रोजेक्ट रुका रहेगा।

यह सेंट्रल का प्रोजेक्ट है। पिछले साल दिसंबर में अयोध्या बायपास के चौड़ीकरण के टेंडर समेत अन्य प्रक्रिया पूरी होने के बाद एनएचएआई ने पेड़ काटने की सभी सरकारी अनुमति भी लेना थी, क्योंकि बायपास चौड़ीकरण का काम करने वाली एजेंसी और एनएचएआई के बीच जो अनुबंध हुआ है, उसके अनुसार पेड़ कटाई जैसी सरकारी अनुमतियां दिलाना एनएचएआई की जिम्मेदारी ही है। 11 अगस्त तक पेड़ कटाई की अनुमति मिलने और फिर काम शुरू होना था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

इसी बीच पेड़ कटाई का मामला एनजीटी (नेशनल ग्रीन ट्रिब्युनल) में चला गया। इसके बाद एक अन्य मामले में एनजीटी ने आदेश दे दिया कि शहरों में कहीं भी 25 से अधिक पेड़ काटने की अनुमति हाई लेवल कमेटी देगी।

नवंबर में रिकॉर्ड बना रही सर्दी...पारा 8 डिग्री तक पहुंचा

भोपाल में 7 रातों से तापमान 9 डिग्री से कम; इंदौर-राजगढ़ भी ठंडे

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में नवंबर में ही सर्दी ने रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। शुक्रवार की रात शिवपुरी सबसे ठंडा रहा। यहां पारा 8 डिग्री तक पहुंच गया। दूसरी ओर, भोपाल और इंदौर में पारे में थोड़ी बढ़ोतरी हुई, लेकिन ये 10 डिग्री के नीचे ही रहे। मौसम विभाग के अनुसार, भोपाल में तापमान 9.6 डिग्री रहा। पिछले सात दिन से पारा 8 डिग्री के आसपास था। इस वजह से ठंड का असर ज्यादा दिखाई दे रहा था। इंदौर में भी पारा 8.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जबलपुर में 9.4 डिग्री, ग्वालियर में 10.5 डिग्री और उज्जैन में 11.8 डिग्री रहा।

दूसरी ओर, छतरपुर के नौगांव और राजगढ़ में 8.2 डिग्री, उमरिया में 8.6 डिग्री, रीवा में 8.8 डिग्री, छिंदवाड़ा और बालाघाट के मलाजखंड में तापमान 9.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि मंडला में 9.6 डिग्री रहा।

मौसम एक्सपर्ट पीके शाह बताते हैं कि उत्तर से आने वाले बर्फीली हवाओं का असर ग्वालियर, चंबल, उज्जैन, इंदौर, सागर और भोपाल संभाग के जिलों में ज्यादा दिखाई दे रहा है। पचमढ़ी दक्षिणी हिस्से में है। यहां तक हवा उतनी रफ्तार से नहीं आ रही है। इस वजह से यहां की रातें भोपाल-इंदौर जितनी ठंडी नहीं है।

डिंडौरी में शीतलहर के चलते सभी स्कूल का समय सुबह साढ़े आठ बजे से कर दिया गया। कलेक्टर अंजू पवन भदौरिया ने देर रात आदेश जारी किए।

देहरादून-शिमला से ठंडा इंदौर- मौसम विभाग के अनुसार, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के कई शहर ऐसे हैं, जहां रात का पारा भोपाल और इंदौर से भी अधिक है। बुधवार-गुरुवार की रात देहरादून में तापमान 10 डिग्री, हिमाचल प्रदेश के शिमला में 8.2 डिग्री और ऊना में 8 डिग्री रहा। यदि इंदौर की बात करें तो यहां 7.6 डिग्री और भोपाल में 8.2 डिग्री रहा।

युवक की चाकू से गोदकर हत्या

घर में मिली खून से लथपथ लाश पुलिस ने शुरू की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कमला नगर में होटल कर्मचारी की धारदार हथियार से गोदकर हत्या कर दी। बॉडी आज सुबह मृतक के नया बसेरा स्थित घर में बिस्तर पर मिली है। गले पर भी चाकू से वार किए गए हैं। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम किया है। पुलिस का कहना है कि हत्या का केस दर्ज किया जा रहा है।

टीआई निरूपा पांडे ने बताया कि धर्मेंद्र सिंह चौहान (36) नया बसेरा में रहता था और होटल में वेटर का काम करता था। गुरुवार की रात को ड्यूटी से लौटने के बाद खाने के बाद घर में सो गया था। उसकी पत्नी तीनों बेटियों के साथ मायके में रह रही है। आठ साल का बेटा और पिता उसके साथ घर में रहते हैं। घटना के समय दोनों दूसरे कमरे में सो रहे थे। सुबह पिता ने उठने के बाद बेटे के खून से सने शव को बिस्तर पर देखा और डायल 100 को सूचना दी। सूचना के बाद टीआई स्टाफ के साथ मौके पर पहुंची।

पिता बोले- किसने और क्यों बेटे को मारा जानकारी नहीं- शव को कब्जे में लेकर पीएम के लिए भेज दिया है। हत्या किसने और क्यों की इस बात का खुलासा नहीं हो सका है। पिता ने हत्या के संबंध में किसी तरह की जानकारी होने से इनकार कर दिया। बेटे को किसने और कब घर में घुसकर मारा इस बात की जानकारी उन्हें नहीं है।

20 घंटे जाम, पुलिस गायब, लोग भूखे-प्यासे फंसे

एमपी-महाराष्ट्र बॉर्डर पर बिजासन घाट में कई ट्रक-कंटेनर फंसे रहे, पुलिस ने खुलवाया ट्रैफिक

सेंधवा (नप्र)। बड़वानी में मुंबई-आगरा नेशनल हाईवे पर लगा जाम 20 घंटे बाद शुक्रवार सुबह 10 बजे खुल पाया। हालांकि अभी भी वाहन रेंगते हुए निकल रहे हैं। कई ट्रक चालकों का कहना है कि घाट पर जाम से वाहन गर्म होकर खराब हो गए हैं। इंजन काम नहीं कर रहे। शुक्रवार सुबह 9.30 बजे तक केवल दो पुलिसकर्मी जाम खुलवाने का प्रयास कर रहे थे। सेंधवा का पुलिस बल सीएम की ड्यूटी में लगाया गया है। जाम में हालात बिगड़ने पर अन्य पुलिसकर्मी पहुंचे और मुंबई जाने वाले मार्ग का जाम खुलवाया गया। इंदौर जाने वाले मार्ग से भी जाम खुलवाया जा रहा है। तीन किलोमीटर में घंटों से फंसे वाहन अब धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। यह जाम गुरुवार दोपहर 3 बजे हुए हादसे के बाद शुरू हुआ था। सेंधवा के बिजासन घाट में एक कंटेनर ने पिकअप और ट्रक को टक्कर मार दी थी, जिसमें तीन लोग घायल हो गए थे। हादसे के बाद मौके पर चौकी और दो थानों का पुलिस बल पहुंचा और क्रेन की मदद से क्षतिग्रस्त वाहनों को हटाया गया।

रॉन्ग साइड से निकल रहे थे वाहन- हादसे में क्षतिग्रस्त वाहनों को हटाने के बाद आवाजाही शुरू हुई थी, लेकिन कई वाहन रॉन्ग साइड से निकलने लगे। इसी कारण जाम बढ़ता चला गया। पूरी रात वाहन धीमे-धीमे आगे बढ़ते रहे। शुक्रवार सुबह भी 10 बजे तक यही हाल रहा।

सुबह हालात बिगड़ने पर पहुंचा पुलिस बल- जाम की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए मौके पर केवल दो पुलिसकर्मी तैनात थे, जो रातभर से जाम खुलवाने की कोशिश करते रहे। सेंधवा का अधिकांश पुलिस बल मुख्यमंत्री की ड्यूटी में पानसेमल गया हुआ है, जिसके कारण यहां केवल एक प्रधान आरक्षक और एक आरक्षक ही मौजूद थे। हाईवे मेंटेनेंस के कुछ कर्मचारी भी सहयोग कर रहे थे। हालात बिगड़ने पर अन्य पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे और जाम खुलवाया गया।

रातभर लगे जाम से वाहनों के इंजन बंद हो गए- जाम में फंसे ट्रेलर के ड्राइवर सीताराम ने बताया, बेल्लारी से सरिए भरकर दिल्ली जा रहा था। गुरुवार रात को बिजासन घाट पहुंचा। यहां जाम लगा हुआ था। इस दौरान घाट चढ़ते समय बिजासन मंदिर के पहले वाहन गर्म हो गया और रास्ते में ही दम तोड़ दिया। वाहन का इंजन काम नहीं कर रहा। रात से परेशान हो रहे हैं। समय पर दिल्ली नहीं पहुंचेंगे। काफी परेशानी जाएगी।

ट्रक चालक किशोर क्वाइल भरकर दिल्ली जा रहा था। उसने बताया कि बिजासन घाट में कल रात से सुबह तक फंसे रहे। घंटों तक खाने-पीने के लिए कुछ नहीं मिला। घाट में नेटवर्क की समस्या रहती है। ट्रैफिक के कारण घाट चढ़ाई में ट्रक भी खराब हो गया।

निजी कार्यक्रम में जाना था, लेकिन जाम में फंस गए- परिवार के साथ धार जा रहे महाराष्ट्र निवासी जितेंद्र पाटिल ने बताया, एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जा रहे थे। घर से जल्दी निकले, लेकिन बिजासन घाट में आकर फंस गए। यहां ट्रैफिक जाम के चलते काफी परेशान हुए। घाट पर किसी तरह की व्यवस्था नहीं मिली। आगे ओंकारेश्वर और महाकालेश्वर दर्शन करने के लिए भी जाना था, लेकिन घाट में ही देर होने से अब समय पर नहीं पहुंच पाएंगे।

बिजासन घाट पर तीन ब्लैक स्पॉट

स्थानीय निवासी सचिन जायसवाल ने बताया कि बिजासन घाट में तीन ब्लैक स्पॉट हैं - चिड़ी मोड़, डबल पुलिया और पुलिस चौकी के सामने। यहां आए दिन हादसे होते रहते हैं। हाईवे करीब 40 फीट चौड़ा है, लेकिन घाट में ढलान ज्यादा होने और मोड़ होने के कारण हादसे होते हैं। यहां घाट पर सड़क की चौड़ाई बढ़ाने और मोड़ खत्म करने की जरूरत है।

पुलिस बल की कमी से बढ़ा जाम

पुलिस बल की कमी के कारण भी बिजासन घाट में जाम बढ़ता गया। पुलिस चौकी के करीब चार से अधिक पुलिसकर्मियों की ड्यूटी सीएम दौरे में लगाई गई है, जिससे चौकी पर केवल दो ही पुलिसकर्मी थे।

सेंधवा ग्रामीण थाना और शहर थाना से कुछ पुलिसकर्मी सहयोग के लिए आए, लेकिन वह भी कुछ हद तक ट्रैफिक क्लियर करवाने के बाद लौट गए। रात में भी केवल दो ही पुलिसकर्मी और हाईवे के कुछ कर्मचारी ट्रैफिक खुलवाने में मदद करते रहे।

देश के
सबसे बड़े जनजातीय बहुल
राज्य होने का

हमें गर्व है

राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह

जनजातीय महानायक धरती आबा बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर सम्मान स्वरूप प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों एवं विकासखंड मुख्यालयों तथा ग्राम पंचायतों में आयोजन

मुख्य अतिथि
मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश

अध्यक्षता
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

15 नवम्बर 2025
प्रातः 10:00 बजे- आलीराजपुर
अपराह्न 1:00 बजे - जबलपुर

डॉ. मोहन यादव का
अभ्युदय मध्यप्रदेश

सशक्त होता जनजातीय समाज

आर्थिक सशक्तिकरण

- जनजाति विकास के लिए ₹ 47,296 करोड़ का बजट प्रावधान
- पेसा कानून से जल, जंगल, जमीन पर अधिकार मजबूत
- तेंदूपत्ता संग्रहण पारिश्रमिक ₹ 3000 से बढ़कर ₹ 4000 प्रति बोरा
- 1,069 वनोपज समितियों से जुड़े 41 लाख संग्राहक
- वन अधिकार अधिनियम में 2.89 लाख व्यक्तिगत और 28,754 सामुदायिक दावे स्वीकृत

धरती आबा एवं पीएम जनमन – बेहतर होता जीवन

- ₹ 500 करोड़ से अधिक के विकास कार्यों का शिलान्यास-लोकार्पण
- 21 जिलों में 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट्स संचालित
- 18,000 से अधिक पीवीटीजी घरों का विद्युतीकरण
- 126 वन-धन केंद्र स्थापित, 83 नए स्वीकृत
- एक हेक्टेयर तक के भूमिधारकों को 5HP तक के पंप पर निःशुल्क बिजली

शिक्षा और अवसर

- 40 लाख से अधिक छात्रों को ₹ 1,566 करोड़ की छात्रवृत्ति
- ₹ 12,000 वार्षिक राष्ट्रीय माध्यमिक मेधा छात्रवृत्ति
- 210 नए जनजातीय छात्रावास और 3 एकलव्य पॉलीटेक्निक कॉलेज स्वीकृत
- 'आकांक्षा' योजना से NEET, JEE, CLAT की कोचिंग सुविधा
- राष्ट्रीय संस्थानों में प्रवेश पर ₹ 50,000 प्रोत्साहन राशि
- विदेश अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति
- सिविल सेवा परीक्षाओं में सफल अभ्यर्थियों को प्रोत्साहन राशि

रोज़गार और आत्मनिर्भरता

- 18,000 से अधिक जनजातीय युवाओं को कौशल प्रशिक्षण
- भगवान बिरसा मुंडा स्व-रोज़गार योजना एवं टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना से 9,000 युवाओं को ₹ 418 करोड़ की स्व-रोज़गार ऋण सहायता
- रविदास ग्लोबल स्किल्स पार्क में 115 प्रशिक्षणार्थियों का प्रवेश

स्वास्थ्य और सुरक्षा

- सिकल सेल मिशन से 1.17 करोड़ से अधिक लोगों की स्क्रीनिंग
- बैगा, सहरिया, भारिया बहनों को ₹ 1,500 प्रतिमाह आहार अनुदान

विरासत से विकास तक

- रानी दुर्गावती एवं राजा भभूत सिंह की स्मृति में कैबिनेट बैठकें
- जबलपुर एयरपोर्ट और मदन महल फ्लाय-ओवर रानी दुर्गावती के नाम पर
- पचमढ़ी अभयारण्य राजा भभूत सिंह के नाम पर
- छिंदवाड़ा में श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय एवं जबलपुर में राजा शंकर शाह तथा रघुनाथ शाह संग्रहालय का लोकार्पण
- सीधी-सिंगरौली में बनेगा बैगा विकास प्राधिकरण
- भगोरिया महोत्सव को मिला राजकीय उत्सव का दर्जा
- शहडोल, धार, खंडवा एवं मंडला में ट्राइबल मार्ट की स्थापना

सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @JansamparkMP JansamparkMP

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी D11141/25 संकल्पना : मध्यप्रदेश माध्यम/2025